H.S.12

लक्ष्मीनारायण लाल

राम की लड़ाई



कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।

राम की लड़ाई

राम की लड़ाई

लक्ष्मीनारायण लाल
एम० ए०, पी-एच० डी०



राधाकृष्ण

'राम की लड़ाई' नाटक के अभिनय, प्रदर्शन, प्रकाशन, प्रसारण आदि किसी भी प्रकार के व्यावसायिक, अव्यावसायिक उपयोग के लिए लेखक की लिखित पूर्व-अनुमति अनिवार्य है।

पता : द्वारा राधाकृष्ण प्रकाशन

प्रथम संस्करण : 1979

मूल्य
10 रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन
2 अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002

मुद्रक
कमल प्रेस, गांधीनगर द्वारा
गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-110032

प्रियवर भानुप्रताप शुक्ल को

सवाल आजादी का[1]

रामगुलाम अपने जीवन के 31 साल पूरा कर 32वें साल में प्रवेश कर रहा है। लोग कहते हैं कि जिस दिन वह पैदा हुआ था उसी दिन उसके माँ-बाप भी गुलामी से आजाद हुए थे। रामगुलाम बड़ा हुआ तो उसे बताया गया वह आजादी की सन्तान है।

लेकिन रामगुलाम अभी भी आजादी की खोज कर रहा है। कहाँ है आजादी ?

नेता दौरे पर आते हैं और रामगुलाम को समझाते हैं—आजादी आने के पहले कानून सात-समुन्दर पार विलायत से बनकर आता था और हमारे सिर पर सवार हो जाता था। आज कानून हम खुद बना रहे हैं, दिल्ली में बैठकर। 'हम' कौन हैं ? 'हम तुम्हारे प्रतिनिधि'। तुमने अपनी सारी सत्ता हमें सौंप दी है और उस सत्ता के सहारे हम राज चलाते हैं। यानी दरअसल तुम राज चलाते हो। ये अफसर-हाकिम हुकम हमारा मानते हैं, लेकिन सेवक तुम्हारे हैं। सरकार तुम्हारी है, राज तुम्हारा है।

लेकिन रामगुलाम को नेताजी की बात समझ में नहीं आती। वह टुकुर-टुकुर देख रहा है—आजादी आयी तो कौन-सा कानून बदला ? आज पुलिस आती है और उसे पकड़कर उसी दफा में बन्द कर देती है जिस धारा में उसके बाप, दादा और परदादा को सन 1935, सन 1912 या सन 1889 में बन्द कर देती थी। उसी कानून से मुकदमा चलता है और वैसे ही सजा होती है। यह कहाँ का न्याय है कि आजाद रामगुलाम पर उसी दफा में मुकदमा चले जिसको अँग्रेजों ने अपने राज को मजबूत करने के हिसाब से बनाया और उसका इस्तेमाल किया ? तब हमारी यह आजादी कैसी है ?

रामगुलाम दस दर्जा तक पढ़ा है। क्या पढ़ा ? वही जो मैकाले साहब बना गये

---

1. प्रस्तुत नाटक अपने प्रथम रूप में 'रामगुलाम की आजादी' नाम से 'पांचजन्य' साप्ताहिक (12 अगस्त 1978—स्वतन्त्रता विशेषांक) में प्रकाशित हुआ था। उस विशेषांक का सम्पादकीय।

थे। उस पर भी 'रामगुलाम बाबू' कहलाने का भूत सवार हुआ और चार-छः साल बाबू बनने की कोशिश में बीत गये। जहाँ जाता था वहीं पता लगता था कि वहाँ तो बाबू की कुर्सी के उम्मीदवारों की लम्बी लाइन लगी है और वह लाइन बढ़ती ही जा रही थी। लाइन खिसकती नहीं थी। जब कोई कुर्सी खाली होती थी और लाइन के आगे बढ़ने की उम्मीद नजर आती थी तब किसी नेता या हाकिम का नजदीकी चील की तरह झपट्टा मारता था और कुर्सी को लेकर उड़ जाता था। आखिर रामगुलाम निराश होकर लाइन से अलग हो गया। यों कहें कि लाइन छोड़ने के लिए मजबूर हो गया और मेहनत-मजदूरी करने लगा। रामगुलाम की बीवी भी मेहनत-मजदूरी करती है। बेटा पढ़ता भी है और मजदूरी भी करता है। दो जून की रोटी कभी मिलती भी है और कभी नहीं भी मिलती है। लेकिन रामगुलाम आस लगाये बैठा है। किसकी आस लगाकर रामगुलाम बैठा है ?

वैसे उसको आस दिलाने हर पाँचवें साल लोग आते हैं। सपने दिखाते हैं, जो उसके सपनों से भी बड़े, बहुत बड़े, होते हैं। लोग खाता खोलकर दिखाते हैं कि देखो, गाँव-जवार-मुल्क कितना आगे बढ़ गया है। रामगुलाम हर साल बहीखातों में रकमों के आगे बढ़ने शून्यों को देखता है। लेकिन रामगुलाम का अपना खाता जहाँ का तहाँ है। सरकारी खाते की रकम में से उसको हिस्सा मिलता है शून्य। रामगुलाम अपने अगल-बगल देखकर अपने ही जैसे 'शून्य' के मालिकों की गिनती करता है तो देखता है कि उनकी तादाद कल से बढ़ गयी है। तब सरकारी खाते में दिखायी गयी यह रकम कहाँ चली जा रही है ?

रामगुलाम देखता है कि उसके ऊपर उसके मालिकों की पकड़ मजबूत होती जा रही है, अफसर-हाकिमों की अकड़ बढ़ती जा रही है। वह इधर-उधर हिल नहीं सकता। जिधर उसको कहा जायेगा उधर ही चलना है, जो उसको दिया जायेगा वही उसको खाना-पहनना है, जो काम बताया जायेगा वही उसको करना है। आवाज करना मना है, क्योंकि आवाज सुनकर सरकार रूपी साँड़ बिदकता है और सींग तानकर मारने दौड़ता है—इसलिए जान को सही-सलामत रखने के लिए यह निहायत जरूरी है कि साँड को चुपचाप खेत में चरने दिया जाये।

इतने पर भी रामगुलाम चैन से नहीं बैठ सकता। लोग आकर उसको भड़काते रहते हैं कि देखो, अमुक सूबे का, अमुक बोली का, अमुक धरम का, अमुक पेशे का दूसरा रामगुलाम तुम्हें गुलाम बनाना चाहता है। इसलिए उससे लड़ो। रामगुलाम कभी-कभी तैश में आकर दूसरे रामगुलाम से लड़ जाता है और लहू-लुहान होने के बाद जब होश में आता है तब देखता है कि दोनों रामगुलाम एक ही कैदखाने में बन्द हैं। दोनों को नकेल डाल दी गयी है और दोनों की नकेल एक ही हाथ में है। जब दोनों रामगुलाम उस हाथ से पूछते हैं कि तुम कौन हो तो जवाब मिलता है—'हम तुम्हारे सेवक, तुम्हारे गुलाम'। रामगुलाम अपने गुलामों की

गुलामी में बँध गया है।

रामगुलाम आजाद कैसे होगा ? गुलामी की रस्सी 31 साल में कसती ही चली गयी है। जन्म लेने के पाँच साल बाद तक तो रामगुलाम खेलता, कूदता, मचलता रहा। पाँच साल की उम्र आने पर उसे लोकतन्त्र की पाठशाला में भरती करते वक्त बताया गया कि 'रामराज्य' का पाठ पढ़ना है। उसके बाद बताया गया कि रामराज्य के पाठ में कुछ खामी थी, इसको ठीक करने के लिए 'कल्याण-कारी राज्य' का पाठ पढ़ो। फिर बताया गया कि वह गलत था, 'समाजवादी' तरीके के समाज का पाठ पढ़ो। जैसे-जैसे रामगुलाम बड़ा होता गया वह अपने राम से दूर होता गया। पैरों के नीचे की धरती खिसकती गयी और वह हवा में दूसरों की लटकायी हुई रस्सी पकड़े लटकता रहा और हर क्षण, हर पल डर से थर्राता रहा कि कब रस्सी हाथ से छूट जाये या अचानक खींच ली जाये और वह धड़ाम से गिर पड़ेगा।

अब इस रस्सी का दूसरा छोर जिनके हाथ में है—वे कहलाते हैं उसके सेवक, उसके गुलाम यानी वह गुलामों का गुलाम है।

रामगुलाम आजाद हो सकता है, बशर्ते वह गुलामी छोड़े। अपने राम को पहचाने और अपने राम से जुड़े—वही राम जिसका नाम लेते-लेते उसका बापू अपने सपनों की धरोहर साकार करने के लिए उसके हाथों में सौंपकर इस दुनिया से विदा हो गया।

क्रम

राम की लड़ाई

•

चरित्र और पात्र

रामगुलाम	राम
रमई काका	जनक
सरजू बाबा	विश्वामित्र
हीरा	लक्ष्मण
विमला	जानकी
शाहजी	वाणासुर
चीलरसिंह	मगध-नरेश
नेताई	रावण
गपोले	परसुराम-पहला
लखपतिया	काशी-नरेश
मालती	सखी
शान्ती	सखी
कालू	मसखरा
नेउर	कश्मीर-नरेश
गड़बड़सिंह	परसुराम-दूसरा

पहला दृश्य

(लीला शुरू होने से पहले—सामने मंच पर लोग, गायक, वादक, अभिनेता आदि खड़े हैं। संगीत उठता है। लोग गाते हैं।)

राम की लड़ाई आयी
हे भाई, हे भाई।
टूटी धनुइयाँ है
छोटे-छोटे हाथ हैं
माता बिछोह है
भालू-बन्दर साथ हैं।
एक रथ पर चढ़ा
एक पैदल जायी
राम की लड़ाई आयी
हे भाई, हे भाई।
एक लंकापति
दूसरा वनवासी
एक जानकी-हरनकर्ता
दूसरा जानकी-पति, भाई
हे भाई, हे भाई।
राम की लड़ाई आयी
हे भाई, हे भाई।

(बीच में अचानक)

मसखरा : मीत करो ज्यादा लीला की गवाई।
हम पंचन से पंचन कै परिचय कराई।।
रमई काका जनक बने हैं।
आहा, कैसे बने-ठने हैं।।
विश्वामित्र बने हैं सरजू बाबा।
अरे शोर किया तो डंडा खाबा।।
रामगुलाम बना है राम...
(सब गाते हैं।)

सब : रामगुलाम बना है राम।
रामगुलाम बना है राम।।

मसखरा : विश्वामित्र ने किया इशारा।
खर-दूषण को इसने मारा।।
अब रावण, बाणासुर, अहिरावण को मारने के लिए इसे चाहिए शिव पिंनाक।
उसी निमित्त यह धनुषयज्ञ लीला है।

सब : उसी निमित्त यह धनुषयज्ञ लीला है।
उसी निमित्त यह धनुषयज्ञ लीला है।।

मसखरा : यह है हीरा जवान।
बना है लक्ष्मण सुजान।।

सब : बना है लक्ष्मण सुजान।

मसखरा : यह बिमला बनी जानकी माई है।

सब : राम की लड़ाई है।
बिमला जानकी माई है।।
आयी राम की लड़ाई
हे भाई, हे भाई।।

मसखरा : साहजी बने हैं बाणासुर
चीलरसिंह बने हैं मगध-नरेश
नेताई बने हैं रावण।
एक राजनेता
एक पुराना जमींदार, एक साहूकार
इन तीनों ने मिलकर की तबाही है।

सब : अरे, गपोले तो गायब हैं।
इन्हीं तीनों के नायब हैं।।

मसखरा : परसुराम का पार्ट वही कर रहे थे
अच्छा-अच्छा तो भाँजी मार दी, वाह-वाह
इन्हें संभालो, ई है लखपतिया
बना है कासी-नरेस। देखो भेस।
ई हैं नेउर, बने हैं कसमीर-राजा
ये हैं गड़बड़सिंह। अरे, आप यहाँ कैसे आ गये ? जाइये, दर्शकों में वैठिये। वहाँ खाली रहेगा तो यहाँ कैसे चलेगा ?

गड़बड़सिंह : खबरदार, फिर मुझे मत बुलाना।
(दर्शकों में जा बैठते हैं।)

मसखरा : मेरा नाम है कालू
कालू से बना मसखरा।
(गाता है)
मैं तो बनारस कै ठलुआ रे
कालू मेरा नाम।

सब : मैं तो बनारस कै ठलुआ रे
कालू मेरा नाम। कालू मेरा नाम।

बिमला : अरे, मेरी सखियों का परिचय तो कराया ही नहीं।

मसखरा : मार कटारी मरि जाना
ओ अँखियाँ किसी से लगाना ना।
(सब गाते हैं। मालती और शान्ति दोनों सखियां नाचती हैं।)

रमई : बस-बस, हो गया परिचय। परिचय के बहाने, लगे गाने-नाचने। अब शुरू करो धनुषयज्ञ लीला।
कैसी मजेदार बात
मिली हमें आजादी आधी रात ।।

सब : कैसी मजेदार बात।
मिली हमें आजादी आधी रात ।।

सरजू : रात के अँधेरे में क्यों ? सुबह की रोशनी में क्यों नहीं ? क्या वह नाटक था ?

रमई : क्या कहा ?

सरजू : हाँ, वह नाटक था। जैसी जिस तरह आजादी मिली, उसी का अपराध भाव था।

सब : कैसी मजेदार बात।
मिली हमें आजादी आधी रात ।।

बिमला : तो क्या हुआ। यह भी तो सच है—क्या ?
बेला फूले आधी रात
बेला फूले आधी रात ।।
सब : बेला फूले आधी रात।
मिली आजादी आधी रात ।।
(गायन)
बिमला : बेला फूले आधी रात, गजरा मैं के-के गले डालूँ ?
राम गले डालूँ लखन गले डालूँ
बेला फूले आधी रात,
गजरा मैं के-के गले डालूँ ?
सरजू : बेटी, जो शिव-धनुष उठायेगा, गजरा उसी के गले डालोगी।
(गाते हुए लोग चलते हैं।)
राम की लड़ाई आयी
हे भाई, हे भाई।
राम की लड़ाई आयी
आधी रात आजादी आयी
राम की लड़ाई आयी।
बेला फूलने की बहार आयी
राम की लड़ाई आयी।
हे भाई, हे भाई
राम-रावण की लड़ाई आयी।
विदूषक : हअ ! हा हा हा ! कहाँ राम कै रमायन, कहाँ उरदे कै भस्का।
खाली पेट आजादी का चस्का। अरे, तू किधर खस्का ?
नेउर : बेफजूल टर्र-टर्र। मैं चला अपने घर्र।
विश्वामित्र : नहीं, नहीं, धनुष-भंग प्रसंग शुरू।
(गायन)
सब : रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर
गावहिं सकल अवधवासी।
अति उदार अवतार मनुज बपु
धरे ब्रह्म अज अविनासी ।।
सरजू : प्रथम ताड़काहति सुबाहुवधि प्रन राख्यो
द्विज हि सब नृपन को गरब हरयो,
भंज्यो संभु चाप जनक-सुता समेत
आवत गृह परसुराम अति हासी।

सब : रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर
गावहिं सकल अवधवासी।

मसखरा : सुनो पंचो, सुनो। गपोले पांडे जो परसुराम बनने वाले थे, उन्हें नेताई ने फोड़ लिया।
कहा—ओ गपोले, यही वक्त है—साफ़ कह दो जनक और विश्वामित्र से—ग्राम पंचायत चुनाव में अगर सारा गाँव वोट दे मुझे, तभी परसुराम का पार्ट करूँगा, हाँ, नहीं तो।

रमई : बड़ा धोखा किया गपोले ने। भाई कालू, कोई मदद कर।

मसखरा : फिर कहा कालू?

रमई : नहीं, नहीं, मसखरा भाई।

मसखरा : वादा करो—सरपंच के चुनाव के लिए मुझे खड़ा करोगे।

रमई : अरे, रामलीला होने को है, तू भी ऐसी बात कर रहा है। मारूँगा एक हाथ कि. .।

मसखरा : अरे रे रे, उपाय बताता हूँ। गड़बड़सिंह को बुलाइये। आ जाओ, भाई।

रमई : हम से गलती हुई। छिमा करो। आ जाओ, परसुराम का पार्ट करो।

गड़बड़सिंह : पार्ट करो! अपना सिर! अपनी जगह छोड़कर नहीं आता। बुलाओ गपोले को, मैं क्यों आऊँ?

मसखरा : अरे, आ जाइये। कान में एक बात बताता हूँ। (आते हैं) आपकी शादी पक्की—परसुराम का फस्टक्लास अभिनय कर दो। लड़की वाले दर्शकों में बैठे हैं। इधर नहीं, उधर। उधर नहीं, इधर। जाइये, परसुराम बन के आ जाइये।

(जाते हैं। दो लोग शंकर-धनुष ले आते हैं। मसखरा दौड़कर उनकी मदद करता है। धनुष सामने रखा जाता है। मसखरे की कमर टेढ़ी हो गयी है। वह दर्द से चिल्लाता हुआ भचकने लगता है। दोनों आदमी पैर-सिर पकड़, खींचकर सीधा करते हैं।)

रमई : बस, बस, ज्यादा सीधा मत करो, नहीं तो ऐंठ जायेगा। हाँ, अब धनुषयज्ञ लीला शुरू करो। संगीत छेड़ो। सावधान, सब लोग अपने-अपने संवाद याद रखें।

मसखरा : ऐ बच्चे लोग, चुप हो जाओ। चकर-पकर बन्द। अपनी-अपनी जगह पर बैठ जाओ।

(संगीत और गायन।)

राजा जनकजो के द्वारी
भीड़ नहीं जात सम्हारी
देश नरेसन भूपति आये।

मसखरा : (बीच में) बैठे हैं सब तोंद फुलाये।

रमई : चुप !
देश नरेसन भूपति आये
बाँधे ढाल तलवारी...राजा जनक...
जनकपुरी में धूम मच्यो है, महकत है फुलवारी।
राजा जनक को भाग जगो है धनुषयज्ञ की बारी।।

रमई : अरे, आप लोग वहाँ क्या कर रहे हैं ? संवाद बोलिये, संवाद।

मसखरा : अरे, जब आपस में झगड़ा है तो संवाद कहाँ से फूटे ? देखिये, चुपचाप खिचड़ी पका रहे हैं। रावण नेताजी, साहजी बाणासुर। कोई तिकड़म लगाने में फँस गये हैं।

रमई : लीला शुरू है, अपना संवाद बोलो, रावण।

मसखरा : ऐ रावण, तेरा ध्यान किधर ? देख, लीला शुरू है इधर।

नेताई : अबे क्या करता है टर्र टर्र।
मारूँगा, होश उड़ जायेगा उधर।

मसखरा : (उँगली पर टोपी नचाता हुआ) यह टोपी है अलबेली।
इक्तीस साल में तेइस बार इसने दल बदली।
किस्तीनुमा है टोपी जिधर हवा उधर चली।
मत पूछिये इसका असली क्या था रंग।
असल तो कुछ था ही नहीं, थी शुरू से ही बदरंग।
अब इसे नीलाम कर दूँ, जो अधिक दे उसके कदमों में रख दूँ।
सुना है दल-बदल रोकने का कानून पास हो रहा है।

नेताई : बन्द कर बकवास।

मसखरा : हाँ गुरू, हो जाव शुरू।

नेताई : भाई, अपन तो राजनीति के आदमी हैं। पहले यह बताओ, राम-लीला में चन्दा कितना वसूल हुआ ? किसने चन्दा इकट्ठा किया ? किसके हुकम से हुआ ? माल किधर गया ?

शाहजी : हाँ, हिसाब हो जाना चाहिए।

मसखरा : अपने-आपको राजनीति का आदमी मत कहो। भ्रष्ट राजनीति का पशु कहो। रावण टिर्रं, गधे का सिर्रं। अरे, अरे, मुझे क्यों मारते हो ? मैं तो आपकी प्रजा हूँ। उन्नीस सौ सत्तावन में पाँच कुएँ खोदे गये कागज पर---ढाई हजार फी कुआँ, सन साठ में

तीन तालाब पाटे गये, जबकि तालाब थे ही नहीं । सन उनहत्तर में चकबन्दी आयी—फी चक पाँच सौ रुपये। सन पचहत्तर में नसबन्दी आयी...।

नेताई : बस, बस, हिसाब हो गया।

मसखरा : अरे, अभी तो रोकड़-बही पूरी खुली भी नहीं ।

नेताई : शाहजी, इसका मुँह बन्द।

शाहजी : ये रख मूसरचन्द।

(रावण धनुष को देखता है।)

रावण : (अभिनय) अरे, यह मेरे गुरु का धनुष है, जो इसकी हँसी उड़ायेगा, चूर-चूर हो जायेगा।

शाहजी : अरे, यह संवाद नहीं है—तुम्हारे पिछले चुनाव का नारा है—जो हमसे टकरायेगा, चूर-चूर हो जायेगा।

नेताई : वाह, वाह ! ऐसा इलेक्शन फिर कभी नहीं आयेगा।

शाहजी : एक बूथ की लुटाई में पाँच हजार रुपये।

नेताई : नकद।

शाहजी : तीनों को कैसा बेवकूफ बनाया !

(दोनों हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते हैं।)

अगला इलेक्शन पता नहीं कब होगा ! समय बड़ा उदास हो गया है। हर साल इलेक्शन हो तो लोग फिलिम देखना बन्द कर दें।

नेताई : अरे, ब्याह-शादी बन्द हो जाये।

रमई : तुम लोग धनुषयज्ञ लीला करने आये हो या कपार फोरने ?

नेताई : देखो, जबान संभालकर बोलो, वरना सब बन्द कर दूँगा, हाँ ! चन्दे का हिसाब कहाँ है ? मुझे जानते नहीं क्या ?

मसखरा : आपको कौन नहीं जानता, महाराज ! सन साठ में जब बड़की बाड़ आयी थी, यही नेता बाबू जिला कलक्टर और अपने एम० पी० को लेकर यहाँ आये थे मुआइना कराने। सरकार की तरफ से जो अन्न, कपड़ा मिला सब ऊपर-ही-ऊपर बेचकर खा लिया। घर बनवाने के लिए फी घर पाँच-पाँच सौ रुपये दिये सरकार ने। यही शाहजी और नेताजी ने मिलकर हमसे अँगूठा लगवाय लिया और सारी रकम हड़प कर गये। बम भोलेनाथ की !

नेताई : बेटे, अपना-अपना पुरुषार्थ है।

(सब राजा लोग दौड़े आते हैं।)

नेउर : यह पुरुषार्थ क्या होता है ?

लखपतिया : यह राज हमें भी बताइये।

चीलरसिंह : हाँ, महाराज !

नेताई : मन्दिर देखा है न ? सबसे ऊपर का जो हिस्सा होता है—सोना वहीं ऊपर लगाया जाता है। और नीचे नींव में जो कंकड़, पत्थर, इंट, गारा लगा है, उसे कौन देखता है—पड़ा होगा। गाँव-जवार के ये देहाती लोग—वही कंकड़-पत्थर, इंट-गारा हैं। मारो...। ऊपर देखना, ऊपर उठना, यही तो है पुरुषार्थ। अरे, पेड़ का फल कोई नीचे लगता है ? ऊपर लगता है। अरे, हाथ बढ़ाओ, जिसके जितने लम्बे हाथ, हाथ में जितना बल, उतना ही फल।

सब : वाह ! वाह ! अरे वाह !

मसखरा : पर मन्दिर तो ऊपर से नीचे तक एक ही होता है। सोचिये भला।

नेताई : सोचना-विचारना तुम लोगों का काम, अपना काम तो पुरुषार्थ।

(इस बीच रमई तेजी से आते हैं जनक के भेष में।)

रमई : यह चरित्र अब नहीं चलने को। उस धरती में जहाँ मन्दिर की नींव दी जाती है, उसमें से जानकी निकली है। बायें हाथ से शिव-धनुष उठाकर दायें हाथ से पृथ्वी माँ की पूजा करती है। इस धनुपयज्ञ में कोई राम आयेगा—क्या है पुरुषार्थ, इसका अर्थ बतायेगा।

मसखरा : रावण का अभिनय करते हुए बोलिये—यह मेरे गुरु का धनुष है, इसका अपमान मैं नहीं सह सकता।

रावण : (अभिनय) रावण का अभिनय करते हुए बोलिये—यह मेरे गुरु का धनुष है, इसका अपमान मैं नहीं सह सकता।

(मसखरा हँसता है।)

वाणासुर ! इसे हँसने दीजिये—हँसना-हँसाना ही इसका काम है।

वाणासुर : महाराज, इस धनुष को मेरी पीठ पर लाद दो। मैं इसे लेकर चम्पत हो जाऊँ।

रावण : हा हा हा ! जिस रावण ने कैलाश पर्वत का मान-मर्दन कर पुष्पक विमान जीत लिया, वह मैं तुम्हारे साथ इस धनुष की चोरी में मददगार बनूं ! नहीं, यह नहीं हो सकता। सुन लो, यह धनुष कोई भी तोड़े, पर मेरे जीते जी जानकी को मेरे सिवा और कोई

नहीं ले जा सकता। हा-हा-हा !

मसखरा : शाबाश पट्ठे। (गा पड़ता है) मर गये, मर गये चम्पालाल, ठंडी वर्फ़ बनाने वाले।

नेताई : अरे, इधर आ, इधर। मुझे सब मालूम है।

शाहजी : मुझे भी मालूम है।

मसखरा : मुझे भी।

(सब बैठते हैं।)

रमई : यह क्या तमाशा है ?

(मसखरा बढ़कर समझाता है।)

मसखरा : (मानो गाता हुआ) ज़रा-सी एक प्राइवेट बात है। ज़रा दूर हट जाइये—विघ्न मत डालिये।

शाहजी : रामगुलाम और विमला की चाल नहीं चलने देंगे हम।

नेताई : नीची जाति का रामगुलाम, राम बने—मैं इस बात पर साम्प्रदायिक दंगे करा दूंगा। यह धर्मशास्त्र के खिलाफ है।

शाहजी : पुरोहितजी से कहूँगा।

नेताई : ये लोग समझते क्या हैं ?

मसखरा : ऐसा है कि विमला कहती थी, आप लड़कियाँ वेचने का धंधा करते हैं।

नेताई : क्या कहा ?

मसखरा : कुछ नहीं, कुछ नहीं, विमला झूठ बोलती है। रामगुलाम को मैंने डाँट दिया।

शाहजी : रामगुलाम क्या बोलता है ?

(राम के भेष में रामगुलाम आता है।)

रामगुलाम : रामगुलाम बोलता नहीं, देखता है। देख रहा हूँ, तुम लोग कब तक बोलते हो। विमला कोई मामूली लड़की नहीं, वह अत्याचार-अन्याय के अंधकार को चीरकर बाहर आयी है। उसने मुझे जगाया है। कोई ताक़त हमें अलग नहीं कर सकती।

नेताई : जा, जा, छोटा मुँह बड़ी बात।

शाहजी : अभी तीन सौ पैंतीस रुपये कर्ज है तेरे ऊपर।

चीलरसिंह : तेरा घर मेरी जमीन पर बना है।

रामगुलाम : गाँव की सारी जमीन अब ग्राम-पंचायत की है।

नेताई : ग्राम-पंचायत हमारी है।

रामगुलाम : रमई काका, देखो यह त्रिभुज राक्षस ! जमींदार, बनिया, और नेता—ये तीन भुजाएँ हैं उसकी।

नेताई : क्या कहा ?

रामगुलाम : मुझे कुछ कहना नहीं आता।

(जाता है।)

रमई : धनुष-लीला में विलम्ब हो रहा है।

शाहजी : कहता है, विमला ने मुझे जगाया। हम भी तो रोज सोकर जागते हैं।

रमई : फिर सो जाते हैं। चलो, शुरू करो।

नेताई : मैं कहता हूँ, रामगुलाम को राम क्यों बनाया गया ?

सरजू : तुम मन्दिर के केवल शिखर देखते हो, जबकि मन्दिर एक सम्पूर्ण है, नींव से लेकर ऊपर तक। खुद टूटे और बँटे हो, तभी हर चीज़ को उसकी सम्पूर्णता से तोड़कर देखते हो। लीला के बहाने एक-दूसरे के पास तो आओ—फिर देखो, बाहर से अलग दीख रहा, भीतर सब एक हैं। रामगुलाम कितना शुद्ध और सीधा है। कहता है—जो भी है सब अपने ही हैं।

नेताई : तुम लोग रामगुलाम को सिर पर चढ़ा रहे हो। भोगोगें इसका नतीजा।

मसखरा : आप लोग तो खामखाह डरते हैं। धूल में रस्सी बरते हैं। चलिये, रामलीला शुरू करते हैं। देखिये, पुरानी बातें फिर यहाँ मत लाइये।

सरजू : रामलीला के बहाने अपने-आप में से जरा बाहर आ जाइये।

मसखरा : भाइयो और बहनो, बुरा मत मानिये, ज्यों केले के पात में, पात-पात में पात, त्यों नेता की बात में, बात-बात में बात।

नेताई : आखिर बिना किसी ताकत के कोई कैसे खड़ा हो सकता है ?

मसखरा : हे रावण, तुझे तो बातें करने का रोग हो गया है। हर वक्त वही ताकत, ताकत, ताकत। बन्द करो मुँह का फाटक।

नेताई : अबे, तुझे क्या पता ! जिसे लग जाये एक बार ताकत का नसा। आखिर रामगुलाम की ताकत क्या है ?

मसखरा : उसकी ताकत तो हर पाँचवें साल खींचकर लखनऊ और दिल्ली पहुँचा दी जाती है। बुरा न मानिये, आपके हाथ में घी-शक्कर।

सरजू : तुम्हारी ताकत बाहर है, तभी तुम आजाद बनकर भी पराधीन हो। हमारी ताकत वही ईश्वर, वही अपना करम, वही अपना धीरज-धरम !

मसखरा : चना गरम। चना जोर गरम। यह चना बड़ा अलबेल्या, सन अड़तालीस में हमने यह दुकान खोल्या। सन उनहत्तर में हमने इसका

दीवाला बोल्या। संन पचहत्तर में सबकी दुकान बन्द कर फिर अपनी दुकान खोल्या। आयी नसबन्दी, दुकान बन्द कर दी। न लगे नमक, न लगे हल्दी। भला हो राजनीति का। फार्मूला मिल गया, कैसे चना बेचकर होता है कोई लखपती। चना गरम। बेचना-बिकना ही अपना धरम।

नेताई : अरे, चुप रहता है या नहीं।

मसखरा : ये हैं चना गरम के व्यापारी, मैं हूँ इनका पटवारी।

नेताई : देखो, यह बदमाश रामलीला नहीं होने दे रहा।

मसखरा : क्योंकि रावण राम बन रहा। पर अब नहीं चलेगी यह चाल। जनता खींच लेगी खाल।

नेताई : जनता माने ?

रमई : जानकी।

नेताई : जानकी माने ?

सरजू : जनक की बेटी, भारत माँ, जिसके शरीर में ऋषि-मुनियों का रक्त है। जिसने पृथ्वी के भीतर से जन्म लेकर हमें यह जताया कि हमारी जान-पहचान तभी पूरी होती है, जब हम अपने से बाहर आते हैं। पर जो अकेला है, वह बाहर नहीं जा सकता, सारी शक्तियों के बावजूद रावण अकेला था। अकेला था तभी डरा हुआ था। डरा हुआ था तभी शक्ति को चुराता, डाके डालता रहता था।

नेताई : तो मैं वही रावण हूँ—मैं रावण, लीला नहीं करूँगा।

सरजू : यही तो, रावण मत बनो। रावण की लीला करो। कपड़े उतारे नहीं कि रावण ग़ायब। भ्रष्ट नेतागिरी को कपड़े की तरह उतारकर देखो, कितने सहज सुन्दर हो, जैसे सब हैं। कहाँ भटकते हो, चलो, रावण बनकर देखो—क्या है रावण। जब अपने-आपको देखोगे तो उसी देखने में सब-कुछ साफ़ दीखने लगेगा।

नेताई : चलो, देखता हूँ।

मसखरा : रामगुलाम को या अपने-आपको ?

नेताई : अगर मैं रावण बन सकता हूँ तो राम भी बन सकता हूँ। हनुमान और भरत भी।

सरजू : यह हुई न बात।

नेताई : मेरा संवाद क्या है ?

मसखरा : रावण धनुषयज्ञ मंडप में आकर पृथ्वी माँ को प्रणाम करता है। प्रणाम करो, रावण।

नेताई : पृथ्वी रावण की माँ ? फिर तो जानकी रावण की बहन हुई ?

मसखरा : यही लीला है। बाहर से जो इतने परस्पर विरोधी दिख रहे हैं— सबका एक ही सम्बन्ध है।

(रावण पृथ्वी को प्रणाम करता है। संगीत बजता है। गायन होता है।)

मूरख, छाड़ि वृथा अभिमाना
औसर बीत चल्यो है तेरो दो दिन को मेहमाना
भूप अनेक भये पृथ्वी पर रूप तेज बलवाना
कौन बच्यौ या काल तालिते मिट गये नामनिसाना
धवल-धाम गज धन रथ सेना नारी चंद्र समाना
अन्त समै सबही को तजि के जाय बसे समसाना...।

रावण : बस, बस, बस। राजागण दिलों पर हाथ रख लें। यह मेरे गुरु का धनुप है, इसे मैं ही उठा सकता हूँ। मैं लंकापति। मेरी भुजाओं में अपार बल। जिधर देखता हूँ उधर सब-के-सब निर्बल।

वाणासुर : सत्य वचन।

मसखरा : रावण, सुन ले आकाशवाणी। तेरी कन्या कुंभनिसी को मधुदैत्य चुराये लिये जा रहा है। कुंभकरण सो रहा है। मेघनाथ भोजन कर रहा है। भागो, जाओ, अपनी कन्या को राक्षस से बचाओ।

(रावण और वाणासुर भागते हैं।)

दूसरा दृश्य

(संगीत उभरता है।)

बोले बन्दी वचन वर सुनहु सकल महिपाल।
पन विदेह कर कहहिं हम भुजा उठाई विसाल।।
नृप भुजवलु विधु सिवधनु राहू,
गरुअ कठोर विदित सब काहू।।
रावण बानु महाभट्ट मारे,
देखि सरासन गवहिं सिधारे।।
सोइ पुरारि को दंड कठोरा,
रामसमाज आजु जोई तोरा।।

जनक : जनकपुरी में पधारे हुए महिपाल, राजा सुजान सुनो। सुनो मेरा प्रण। जो इस शंकर पिनाक को उठा लेगा उसे मैं अपनी बेटी जानकी का पति मानूंगा। जो करेगा अपने भुजबल से मेरा यह प्रण पूरा, उसे मेरी बेटी जयमाला देगी, न होगा मेरा वचन अधूरा।

मसखरा : गुरु-संग पधारे हैं लक्ष्मन-राम इस नगर में, किसी क्षण भी वे आ सकते हैं, इस रंगभवन में। धनुषयज्ञ शुरू हो चुका है। वीर जन आजमायें अपनी किस्मत को। हटो, बचो, चीलरसिंहजी आ रहे हैं, बाप-रे-बाप, इतने गुस्से में !

(बड़ी तोंद वाले चीलरसिंह आते हैं।)

आपकी तारीफ ?

चीलरसिंह : बता, क्या है तारीख ?

मसखरा : हमारे यहाँ तारीख, सन, संवत् नहीं चलती, हमारे यहाँ चलती हैं अँग्रेजी की 'डेट', चीलरसिंह महाराज है विलायती ठेंट। ये नहीं जानते क्या हैं नीति-अनीति, ये करते हैं सिर्फ विलायती राजनीति।

चीलरसिंह : मैं अँग्रेज हूँ, विलीवास्केट !

मसखरा : अँग्रेज नहीं, रंगरेज हैं। कोई भी सीधी-सादी चीज हो, कोई भी बात हो, उसे झट रंग देंगे अपनी भ्रष्ट राजनीति के रंग में, छुये बिना धनुष को कर देंगे धनुष-भंग ये !

चीलरसिंह : और क्या, मुझ जैसा वीर कौन है ?

मसखरा : (गा उठता है।)

ये हैं बड़े वीर मजबूता।
ये हैं बड़े वीर मजबूता।
मक्खी मारें मोंछ उखारें
तोड़ें कच्चा सूता।
ये हैं बड़े वीर मजबूता।
हँड़िया दाल सवासौ रोटी
खाकर हो गये मोटे।
एक जलावें चार लड़ावें
खुद खटिया तर लूका
ये हैं बड़े वीर मजबूता।

तो चलिये महाराज, धनुष उठाइये।

चीलरसिंह : फाइल की तरह धनुष मेरा प्राइवेट सेक्रेटरी उठायेगा। मैं तो केवल हस्ताक्षर करता हूँ।

मसखरा : अरे, यह फाइल नहीं, धनुष है।

चीलरसिंह : यह धनुष तो कभी का टूट चुका है।

मसखरा : जी हाँ, पहले तोड़ा अँग्रेजों ने, इस्तमरारी बन्दोबस्त करके, परमानेंट सेटिलमेंट; फिर तोड़ा जमींदारी ने, लूट-पाट में भाग लेकर। फिर तोड़ा चुनाव ने; जो बाकी रहा उसे लगे हैं हम तोड़ने में। जै राम जी की।

चीलरसिंह : यह रामलीला हो रही है कि पोपलीला ?

मसखरा : जब आपने कहा कि यह धनुष कभी का टूट चुका है, तो कहाँ से होगी अब रामलीला ?

चीलरसिंह : अरे, मेरे मुँह से निकल गया।

मसखरा : यह कोई भ्रष्ट राजनीति का मंच है, जो आया बक दिया ? यह

वह नोटंकी नहीं, जहाँ आप अकसर रूप बदलते है। जी हाँ।

(दौड़े हुए गपोले आते हैं।)

गपोले : (गुस्से में) वेगिदेखाऊँ, मूढ़ न त आजू, उलटो महि जहँ लगि तब राजू। हा-हा-हा, चंड पर चंड कर दूं, पर्वत को भी खंड-खंड कर दूं। कहाँ है गड़बड़सिंह ? मेरे जीते जी कोई दूसरा कैसे कर सकता है परसुराम का पार्ट ? मारूँ वह झापड़ कि फेल हो जाय हार्ट !

मसखरा : अब संभालो। आपने मना कर दिया था कि रामलीला में भाग नहीं लूंगा। परसुराम का पार्ट नहीं करूँगा।

गपोले : तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम दूसरा परसुराम बना लो !

मसखरा : अरे भाई, रामलीला तो करनी थी।

गपोले : कहाँ है गड़बड़सिंह ? उसकी यह हिम्मत कि मेरे जीते जी वह परसुराम बने ! मैं उसकी खाल खींचकर, भूसा भरा कर...।

मसखरा : रंग लगाकर, भंग पिलाकर इग्लैंड भिजवा दूंगा।

रमई : देखिये, रामलीला में विघ्न मत डालिये। दर्शकों में बैठकर शान्ति से रामलीला देखिये।

गपोले : तुम चुप रहो, रमई काका।

चीलरसिंह : बड़े राजा जनक बने हुए हैं !

मसखरा : सारी आग उसी नेताई की लगाई हुई है। पहले गपोले को मना किया—शर्त रखी चुनाव में समर्थन की। जब दूसरा परसुराम आ गया तो अब आग में मिट्टी का तेल डाल दिया।

गपोले : चुप रहता है कि नहीं ?

रमई : रामलीला होने दोगे कि नहीं ?

गपोले :
रामलीला तभी होगी जब मैं होऊँ परसुराम।
नहीं जानते मेरी कूअत, उलट दूंगा सारा काम।
उलट दूँगा सारा काम, मेरा है नाम गपोले।
गड़बड़सिंह के सिर पर, मैं बरसाऊँ गोले।

(गुस्से में परसुराम के रूप में गड़बड़ आते हैं।)

गड़बड़सिंह : अरे जा, जा, यहाँ कोहड़ बतिया कोउ नाहीं,
तो तर्जन देखत मुरझाहीं।
मैं गड़बड़ नहीं, अब हूँ परसुराम,
फरसा मेरे हाथ में, कर दूं काम तमाम।
कर दूं काम तमाम, नहीं हूँ ऐसा-वैसा,
लौटे चला जा जैसे का तैसा।

गपोले : तेरी यह मजाल, खींचता हूँ तेरी खाल।

गड़बड़सिंह : जा, जा, मत बजा गाल।

(संघर्ष। लोग बीच-बचाव करते हैं।)

गपोले : या तू रहेगा या मैं।

मसखरा : सच है—रह नहीं सकतीं दो तलवारें एक म्यान में, दोनों उम्मीदवार हैं सरपंची के चुनाव में। सारी आग नेताई की लगायी हुई है। चीलरसिंह, तुम क्या खुसुर-पुसुर कर रहे हो?

चीलरसिंह : सब वही कर रहे हैं।

सरजू : सब पर इतना बीता है कि वही फूटकर बहने लगता है। फिर भी सोचो तो भला, आखिर तब भी एक-दूसरे के साथ क्यों रहना चाहता है? क्योंकि एक-दूसरे के साथ फिर भी अपनी किसी सनातन एकता, समानता का अनुभव करता है। जिसे इस अनुभव पर विश्वास नहीं वह इस लीला में हिस्सेदार नहीं।

(इस बीच नेताई और शाहजी वहाँ आ खड़े हुए हैं।)

नेताई : मैं पूछता हूँ—गपोले को परसुराम क्यों नहीं बनाया जाता?

शाहजी : जो पहले का फैसला था वह माना क्यों नहीं जाता?

रमई : फैसला आप करें, खुद तोड़ें आप, फिर उलटे लड़ें भी आप, और इस गन्दी लड़ाई में सबका लहू-लुहान करें।

नेताई : क्या मतलब?

मसखरा : मतलब मैं समझा दूँ—पर हाथ जोड़ता हूँ मेरे इस सिर का खयाल करना, मेरे बच्चों का ध्यान रखना। मतलब यह है कि आज से चालीस साल पहले आप ही इस गाँव में तिरंगा झंडा लेकर आये। पाँच साल बाद समाजवादी झंडा लाये। और तिरंगे झंडे को उलटकर झोला सिला लिया। फिर तीन साल बाद लाल झंडा लाये और समाजवादी झंडे से जूता साफ करने लगे...।

गपोले : अबे चोप्प!

नेताई : निकाल दो इसे। अरे रे, रामलीला से, अपनी पारटी से नहीं।

मसखरा : बकवास है तुम्हारी पारटी।

सरजू : बकवास हमारी जिन्दगी में है तो इससे बचोगे कैसे? यहाँ घटी हर घटना का सम्बन्ध हमसे है, इसीलिए हमी जिम्मेदार हैं। हर झंडे ने हमें बाँटा और हर चुनाव ने हमें मनुष्य से वोटर किया। जो कुछ कहीं होता है, उसका असर तब तक नहीं मिटता, जब तक वह मिटाया नहीं जाता। और यह तब तक सम्भव नहीं

होता जब तक हर आदमी यह महसूस नहीं करता कि एक नहीं, सब हैं सब के लिए जिम्मेदार।

(सब चलते हैं। यात्रा-गान)

राम की लड़ाई आयी
हे भाई, हे भाई।
आगे-आगे राम चलें
पीछे लछिमन भाई।
ताके पीछे मातु जानकी
बिपदा कही न जायी
हे भाई, हे भाई।
राम की लड़ाई आयी
हे भाई, हे भाई।
(यात्रा थमती है।)

तीसरा दृश्य

(रामगुलाम के दरवाजे पर मालती के साथ बिमला आती है।)

रामगुलाम : विमला, क्या बात है ? मालती, क्या हो गया ? बोलती क्यों नहीं ?

मालती : बहुत जुलुम हो गया। विमला दीदी के पिता की हत्या हो गयी।

रामगुलाम : शिवशंकर बाबा !

मालती : उन्नीस सौ इकहत्तर का यह चुनाव जो कुछ न करा डाले थोड़ा है।

रामगुलाम : यह कब की बात है ?

विमला : इलेक्शन से पिछली रात की। उस दिन सुबह से तीनों पार्टियों के लोग झोले में रुपये, पिस्तौल, हथगोला भरे पिताजी के पास आते रहे। हर तरह से दबाव डालकर अपने हक में वोट लेने के लिए।

रामगुलाम : जिसका नाम शिवशंकर बाबा ले लेते, पूरा इलाका, गाँव-जवार उसी को ही मतदान करता।

विमला : वह एक-एक को डाँटते-फटकारते रहे—यह आजादी नहीं, गुलामी है। यह मतदान नहीं, डाकाजनी है। भारत माता का श्राप लगेगा। सारे गाँव-जवार से कह दिया कि जब चुनने को कुछ नहीं है तो चुनाव किसका ! उसी रात मेरे साधू पिता की हत्या...।

(एक औरत आती है।)

औरत : अरे, यही तो है बिमला—शिवशंकर की बेटी। इसके घर आयी है। इसके साथ घर-बैठा बैठेगी ?

मालती : चुप रह, मुँहझौंसी।

औरत : हाँ-हाँ, पता है बड़ा परेम है—मुला गाँव वाले हड्डी-पसली एक कर देंगे। ऊँची जात की लड़की, नीची जात का लड़का—वही कहावत है कि राह चला न जाये, रजाई का फाँड़ बाँधे। गलुक्का देखो इतना ना फुलावो, हाँ...।

मालती : जा, जा...।

(औरत जाती है।)

बिमला : क्या सोच रहे हो ?

(सरजू बाबा उठते हैं।)

रामगुलाम : कुछ नहीं। आवो, घर में चलो।

बिमला : सोच लो—बहुत लम्बी लड़ाई है।

रामगुलाम : सोच लिया है।

सरजू : सोचो नहीं, संकल्प करो।

रामगुलाम : संकल्प करता हूँ।

सरजू : अब बोलो अपने अन्त:करण से।
खबरदार, भागकर पीछे न चले जाना।
हर समय इसी वर्तमान में रहना।
समस्या वर्तमान है तो इसका हल भी वर्तमान में ही है। जो रो पड़ता है, वह पीछे भागता है, अपने बचपन में। बचपन में कितना रोया है, याद है न ? वही रुलाता है। वर्तमान में संकट आया नहीं कि वही बच्चा खींचकर पीछे भागता है। पीछे मत जाना, भागना नहीं।

रामगुलाम : आपका आशीर्वाद। सुनो बिमला, तुम्हारा इस तरह आना, मेरे घर में रहना, तुम्हारे आत्म-सम्मान के खिलाफ है। यहाँ ले आने के लिए तुम्हें, मैं खुद आऊँगा तुम्हारे घर।

बिमला : तब लड़ाई होगी।

रामगुलाम : लड़ाई लड़ूँगा।

(बिमला लौट जाती है।)

सरजू : और एक दिन रामगुलाम गया बिमला के गाँव। सोहाग चूनर, चूड़ियाँ, पायल, बिछुए, सिंदूर लिये। गाँव वालों ने विरोध किये। लाठियाँ उठा लीं। मार दो जान से—ब्राह्मण की बेटी ले जाने आया है। मैंने समझाया। यह सम्बन्ध जात-बिरादरी से ऊपर

का है। यह दैवी सम्बन्ध है। राम मेरा शिष्य है। मैंने उसे बचपन से पढ़ाया-सिखाया। उस जैसा चरित्रवान, धैर्यवान...।

एक : और बलवान।

दूसरा : शक्तिवान।

(दोनों लाठियाँ लिये सरजू को घेर लेते हैं।)

सरजू : हाँ-हाँ, बलवान, शक्तिवान।

एक : देखते हैं, तेरा शिष्य कैसे ले जाता है हमारे गाँव की बेटी?

दूसरा : अपने शिष्य को बचाकर ले जावो चुपचाप।

सरजू : मेरा शिष्य ऐसा-वैसा नहीं।

दोनों : क्या कहा?

(रामगुलाम और बिमला आकर सरजू को बचाते हैं।)

बिमला : तब कहाँ थे तुम लोग, जब मेरे साधू पिता की हत्या हुई? कहाँ था सारा गाँव-जवार, जब मुझे छूना, स्पर्श करना क्या, मुझे देखना भी नहीं चाहता था। मुझे ऐसा चर्मरोग हुआ था कि जिस रास्ते से मैं गुजरती, लोग रास्ता छोड़ देते। मेरा शरीर-चर्म, पत्थर के समान जड़ था। इसे न जाड़ा लगता, न गरमी। लोग मेरे मुँह पर कहते, खासकर औरतें—विमला कुलच्छनी है—इसे श्राप लगा है—स्पर्श-सुख इसके भाग्य में नहीं है। जिसके स्पर्श से आज मैं जड़ से चेतन हुई अब मुझे उससे कौन अलग कर सकता है?

(बिमला, रामगुलाम सरजू के साथ चलते हैं। यात्रा-गान)

राम की लड़ाई आयी
हे भाई, हे भाई।
टूटी धनुइयाँ है
छोटे-छोटे हाथ हैं
एक रथ पै चढ़ा
एक पैदल जायी।
राम की लड़ाई आयी
हे भाई, हे भाई॥

चौथा दृश्य

(धनुषयज्ञ लीला)

जनक : धन्य है, सभा-मंडप दर्शकों से भर गया।

मसखरा : मेहमान लोग अपने-अपने आसनों पर जम गये।

जनक : योधा, राजागण, सभा-मंडप जन, सुनें। इस धनुष का निर्माण विश्वकर्मा ने किया। यह शंकरजी को दैत्यों को मारने के लिए दिया गया।

मसखरा : ऐसा ही एक धनुष विष्णु के पास था। एक बार ब्रह्मा ने शिव और विष्णु में झगड़ा करा दिया।

जनक : दोनों में भयानक युद्ध हुआ। युद्ध विध्वंसकारी हो जाता, यदि देवता बोध में न आ जाते। उन्होंने कहा—इस धनुष का निर्माण असुरों को मारने के लिए हुआ था। वह उद्देश्य पूरा हो चुका। इसे अब स्मृति-रूप में कहीं रख देना चाहिए। विष्णु ने अपना धनुष ऋचीक के पास और शंकर ने निमि के पुत्र देवरात के पास धरोहर रूप में रख दिया।

विश्वामित्र : ध्यान से सुनो। राजा जनक को यह पैतृक सम्पति के रूप में मिला। वह नित्य इसकी पूजा करते थे। एक दिन उनकी बेटी ने धनुष उठाकर उसे झाड़-पोंछकर एक और उत्तम स्थान पर रख दिया। राजा जनक चकित रह गये। उन्होंने संकल्प किया कि जानकी का विवाह उसी वीर पुरुष के साथ करूँगा जिसमें इस धनुष को उठाकर प्रत्यंचा चढ़ाने की शक्ति हो।

जनक : जो वीर इस धनुष की प्रत्यंचा खींचकर चढ़ा देगा, उसी के साथ जानकी का विवाह बिना कुल-जाति-विचार किये कर दिया जायेगा।

(राजागण अपनी-अपनी कमर कसते हुए परस्पर)

राजागण : यह क्या ? जानकी का व्याह बिना कुल-जाति-विचार किये कर दिया जायेगा !

मगध-नरेश : ओ मुख्य है वीरता।

काशी-नरेश : पुरुषार्थ।

(राजा लोग अपनी-अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं।)

मसखरा : अरे, शक्ति-प्रदर्शन कुर्सी पर नहीं, यहाँ करो।
मिला है यह तमाशा देखने को आज भागों से।
खिंचे आयेंगे राजा लोग कच्चे धागों से॥

(राजा लोग हँसते हैं।)

अरे, हँसिये नहीं, एक-एक आकर धनुष उठाइये, अपनी किस्मत आजमाइये, और तशरीफ का टोकरा यहाँ से ले जाइये।

(गपोले आते हैं।)

गपोले : मैं ही हूँ परसुराम इस लीला का।

(गड़बड़सिंह दौड़े आते हैं।)

गड़बड़सिंह : मैं हूँ परसुराम रामलीला का।

गपोले : काँप उठते हैं लोग जब मैं बोलता हूँ।

गड़बड़सिंह : तुम बोलते नहीं, हकलाते हो।

गपोले : क्या कहा !

(दोनों फरसा लेकर एक-दूसरे पर प्रहार करने को होते हैं। राजा जनक के रूप में रमई आकर।)

रमई : लड़ो नहीं, लड़ो नहीं, ठीक है।...इस रामलीला में दो परसुराम होंगे, एक दाहिनी ओर खड़ा होगा, दूसरा बायीं ओर।

गपोले : मैं लैफ्टिस्ट हूँ, बायीं ओर खड़ा होता हूँ। जहाँ जाता हूँ इनकलाब करता हूँ।

गड़बड़सिंह : इसकी खाल मोटी है। इसके लिए इनकलाब बन्दर की रोटी है।

मसखरा : सावधान, चुप रहिये, जब आपकी बारी आये तभी बोलिये।

गड़बड़सिंह : तुम हकलाते हो, इसलिए केवल मूक अभिनय करोगे। संवाद मैं बोलूंगा।

गपोले : (हकलाते हुए) यह किसका फैसला है ?

रमई : मेरा।

(संगीत बजता है।)

मसखरा : मिला है यह तमाशा देखने को आज भागों से।
खिंचे आये हैं राजा कच्चे धागों से ।।

जनक : अब वीर पुरुष एक-एक कर शिव-धनुष के पास आये।
अपने भुजबल और पराक्रम को आजमाये ।।

चीलरसिंह : ये न समझो मेरी इस बात में गरूरी है।
सीता-स्वयंवर में सीता की उपस्थिति जरूरी है ।।

जनक : ठीक कहा, यह हमारी भूल है।

गपोले : अपने ही आदमी हैं।

गड़बड़सिंह : तभी पेट में चीलर काट रहे हैं।

मसखरा : ऐ, चुप रहो।

गपोले : चौप्प !

मसखरा : रंगभवन में जानकी पधार रही हैं।

(गायन उभरता है। जानकी दो सखियों सहित धीरे-धीरे पधारती हैं।)

जानि सुअवसर सीय तब पठई जनक बोलाइ।
चतुर सखी सुन्दर सकल, सादर चलीं लवाइ ।।
सिय शोभा नहीं जायी बखानी,
जगदम्बिका रूप गुन खानी ।।
उपमा सकल मोहिं लघु लागी,
प्राकृत नारि अंग अनुरागी ।।
जो पटतरिअ तीअ सम सीया,
जग असि जुवति कहाँ कमनीया ।।

(विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण आते हैं।)

मसखरा : बोलो, सियावर रामचन्द्र की जय।

गपोले : मैं नहीं बोलूँगा जय-जयकार !

गड़बड़सिंह : ऐसे परसुराम को धिक्कार।

जनक : यह जनकपुर का सौभाग्य है। विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण यहाँ पधारे हैं। देश-देश के राजाओं के आगमन से हम धन्य हुए हैं। जानकी के कारण ही यह सौभाग्य है। यह स्वयंवर जानकी का धर्म है। जो उठावे शिवधनुष वही पुरुष वर है।

विश्वामित्र : यह पूरा जगत धनुषयज्ञ लीला है। जीवन और समाज धनुष है—जो इसे उठाकर प्रत्यंचा कस दे, वही पुरुष है। यह धनुष शिव का है। सागर-मंथन में जब विष निकला तो चारों ओर हाहाकार

मच गया। सबकी इच्छा अमृत पीने की, विष कौन पीये ? जिस शिव ने पिया उस विष को, उसी का पिनाक है यह। जो अपने समय सागर-मंथन का विष पीने वाला होगा, वही उठायेगा इस धनुष को।

मसखरा : कौन है वह वीर जो इस धनुष को उठाये—राजा जनक की चिन्ता मिटाये ?

मगध-नरेश : मैं हूँ वह वीर जो इस धनुष को उठाऊँगा।

काशी-नरेश : ऐसे धनुष बहुत उठाये हैं।

जनक : आइये, एक-एक कर अपने पराक्रम दिखाइये।

मसखरा : उठिये। चलिये। सब डर रहे हैं कि हँसी होगी। भूल गये हैं कि यह धनुषयज्ञ लीला है। जो अपने-आपसे बाहर निकल आवेगा, कर्म तो उसी के लिए होगा लीला। राम-लक्ष्मण के अलावा सब डर रहे हैं, क्योंकि अपनी ही सीमा में सभी मर रहे हैं। तो भइया, संगीत बजाओ। नेउर, लखपतिया को लीलामय बनाओ।

(संगीत बजता है।)

अरे नेउर, भूल जाओ, तुम नेउर हो। इस वक्त कश्मीर के राजा हो।

(संगीत गायन)

रंगभूमि जब सिय पगु धारी,
देखि रूप मोहे नर-नारी॥
सिय चकित चित रामहिं चाहा,
भए मोहबस सब नरनाहा॥
गुरुजन लाज समानु बड़,
देखि सिय सकुचानि॥
लोकि विलोकन, सखिन तन,
रघुवीरहिं डर आनि॥

मसखरा : बस, बस, बन्द करो गाजा-बाजा।
धनुष उठाने आते हैं चीलरसिंह राजा।

चीलरसिंह : अरे ओ लखपतिया, संभाल मेरा पेट,
देता हूँ धनुष को एक चपेट।

(लखपतिया जो इस समय काशी-नरेश बना बैठा है।)

लखपतिया : हेश, हेश। लखपतिया है इस वक़्त काशी-नरेश।

मसखरा : तो महाराज, मैं बन्द कर दूँ आपका गेट।
संभालता हूँ आप का पेट।

(चीलरसिंह धनुष उठाने चलते हैं, बार-बार गिरते और लुढ़कते हैं।)

चीलरसिंह : देखना, अन्त में विजय मेरी ही होगी।

गपोले : वहुमत हमारा है।

गड़बड़सिंह : हाय, धड़ाम से गिर गया वेचारा है।

मसखरा : देखिये, यहाँ कोई क्रिकेट का खेल नहीं हो रहा है कि आप लोग कमेंट्री करते जा रहे हैं। चलिये एक बार और।

चीलरसिंह : हर्गिज नहीं। इस धनुप में है कोई चक्कर।

मसखरा : तो हो जाइये रफूचक्कर।

चीलरसिंह : यह भ्रष्टाचार है। इसकी जाँच के लिए कमीशन वैठे। जाँच-आयोग, यह मेरी माँग है। मैं इस सवाल को जनता में उठाऊँगा। इस संघर्ष को सड़क पर ले आऊँगा। गपोले, चलो, आओ मेरे साथ।

गपोले : इतनी मुश्किल से परसुराम का पार्ट मिला है, आप चलिये, मैं अपना पार्ट पूरा करके आऊँगा, फिर मजा चखाऊँगा।

(चीलरसिंह का प्रस्थान।)

मसखरा : सावधान ! अव पधारते हैं काशी-नरेश।

काशी-नरेश : कहाँ है धनुष शिव का ?

गड़बड़सिंह : अरे लखपतिया, तुझे कम दिखायी पड़ता है रे ?

काशी-नरेश : किसने कहा मुझे लखपतिया, तोड़कर मसल दूंगा जैसे कद्दू की वतिया।

मसखरा : नाराज़ मत होइये, काशी-नरेश। यह है धनुष, कीजिये क्लेश।

(धनुष उठाने में तरह-तरह के प्रयत्न और असफल होकर)

काशी-नरेश : आश्चर्य है, यह धनुप उठता क्यों नहीं ?

मसखरा : महाराज, जाकर थोड़ा दूध पी आइये !

लखपतिया : यह धनुप जगह-जगह से टूटा है, तभी यह उठाये उठता नहीं।

मसखरा : महाराज, अव प्रस्थान कीजिये।

लखपतिया : वह आ रहा है वाणासुर के साथ रावण, ध्यान दीजिये।

(रावण और वाणासुर हँसते हुए आते हैं।)

रावण : हम सबसे पहले आये थे, पर आकाशवाणी सुनते ही चले जाना पड़ा था।

वाणासुर : हा-हा-हा !

रावण : अरे, यह क्या सचमुच जनक का दरबार है ? जानकी के धनुष-

यज्ञ का शृंगार है ? कहीं कोई नृत्य-संगीत नहीं। कहाँ है राजा जनक ?

जनक : स्वागत है लंका-नरेश का।

रावण : धनुषयज्ञ में इतनी उदासी क्यों ?

गड़बड़सिंह : महँगाई बहुत है।

मसखरा : ऐ मुँह वन्द।

(जनक ताली बजाते हैं। एक के बाद दूसरी नर्तकी का नर्तन-गायन।)

वाह-वाह ! खुश रहो, आजाद रहो ! यहाँ रहो या इलाहाबाद रहो।

नेताई : यह किसके घर की है ?

गपोले : शहर से लायी गयी है।

नेताई : और दूसरी ?

गपोले : लखपतिया की साली है।

नेताई : भाई, अपने देश में कितना सौंदर्य है ! कितनी कला है !

मसखरा : लीला-संवाद बोलिये। नाच-गाना बन्द।

(लीला-अभिनय)

रावण : तुम कौन ?

वाणासुर : स्वनाम-धन्य महाराज वलि का पुत्र वाणासुर हूँ। तुम कौन ?

रावण : पौल...(नहीं उच्चारण कर पा रहा है) पौल...पौल...मुझसे नहीं बोला जाता। मैं रावण का पार्ट नहीं करना चाहता था।

मसखरा : अच्छा, इस संवाद को काट दिया, आगे बोलो—मैं जगतविजयी दशानन हूँ।

वाणासुर : पर असली नाम क्या है ?

रावण : लोग मुझे रावण कहते हैं।

वाणासुर : कैसा रोने वाला नाम है।

रावण : मूर्ख, मैं दूसरों को रुलाता हूँ।

वाणासुर : अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना !

रावण : मेरी वीरता दिक्पालों से पूछो। देवगण मेरे डर से घर छोड़कर भागते हैं।

वाणासुर : तो उठाओ यह धनुष।

रावण : इसे कब का उठा चुका। मैं बिना धनुष चढ़ाये सीता का चरण करूँगा।

मसखरा : चरण नहीं, वरण।

रावण : अरे चरण-वरण में क्या अन्तर ?
तुम मेरा क्या कर सकते हो ?

वाणासुर : मैं वही करूँगा जो सहस्रार्जुन ने किया था।

रावण : सावधान, जीभ संभालकर बात करना।
मैं तुम्हें द्वंद युद्ध के लिए आमन्त्रित करता हूँ।

वाणासुर : तुम्हारा जैसा गधा का सिर है वैसी ही तुम्हारी बातें भी हैं। मूर्ख, यह स्वयंवर है, युद्धभूमि नहीं।

रावण : क्या कहा ?

शाहजी : अरे भाई, यह लीला-संवाद है, बुरा मत मानना।

नेताई : हमें जान-बूझकर परस्पर लड़ाया जा रहा है। हमारी एकता खतरे में है।

मसखरा : अरे रावण, अपना संवाद बोल !

रावण : क्या कहा ?

वाणासुर : यह स्वयंवर है, युद्धभूमि नहीं।

रावण : तो फिर कभी देखा जायेगा।

वाणासुर : देखा कब जायेगा ? फैसला तो धनुष के हाथ है। अपना पराक्रम क्यों नहीं दिखाते ?

रावण : पहले तुम !

वाणासुर : पहले आप।

रावण : नहीं।

वाणासुर : जी नहीं।

रावण : नहीं तो पछताओगे।

वाणासुर : यह मेरे गुरु का धनुष है। मैं इसके उठाने का अधिकारी नहीं। सीता माता के समान है।

नेताई : अबे बनिया बक्काल, विमला माता समान है और रामगुलाम ?

(संगीत। यात्रा-गान और यात्रा)

आज मोहिं रघुवर की सुधि आयी।
आगे-आगे राम चलत हैं
पीछे लछिमन भाई।
ताके पीछे मातु जानकी
विपदा कही न जायी।
आज मोहिं रघुवर की सुधि आयी।

पाँचवाँ दृश्य

रामगुलाम : हाकिमजी, मेरे पिता के मरते ही इन्होंने मेरी सारी जमीन बेदखल कर ली। माई और दीदी खाने के लिए मोहताज। मैं भागकर कलकत्ता गया।

गपोले : चकबन्दी के हाकिम के पास इतनी फुर्सत नहीं, तेरी बकवास सुनने के लिए।

हाकिम : फुर्सत है। बोलो, जरा नमक-मिर्च कम लगाओ।

रामगुलाम : कलकत्ता से लौटकर देखा—मेरे खेत में इनके हल चल रहे हैं। अपने हक के लिए मैंने विरोध किया। पंचायत बुलायी। पंचायत में जो मेरे हक के लिए बोला उस पर लाठी चल गयी।

चीलरसिंह : ऐसे ही अगर तेरा हक छीन रहा था तो मुकदमा क्यों नहीं किया ?

हाकिम : क्या मजाक करते हो, यह और मुक़दमा। अदालत, कचहरी, आप लोगों के लिए है।

नेताई : ठीक है। अपने हक के लिए कोई कागज-पत्तर है ?

रामगुलाम : कैसा कागज-पत्तर ! यही मुंशीजी और रमई काका मेरे गवाह हैं।

(सरजू आते हैं।)

शाहजी : लो, यह भी सूंघते-सूंघते पहुंच गये। इन्हें पहचान रखें, हुजूर। यह इसके गुरु हैं। यह जितना ऊपर हैं, उतना ही जमीन के नीचे हैं। पूरा देश घूमे हैं, पैदल। अँग्रेजी, फारसी, संस्कृत पढ़ते-बोलते हैं। जितने ज्ञानी उतने ही साहसी।

सरजू : अरे, तुम पहचानो, उन्हें क्या कहते हो ? वे कोई इस गाँव के हैं। तुम हमें पहचानो—जैसे तुम्हारे बाप-दादा पहचानते थे। वे होते तो गाँव-जवार का यह हाल न होता। वे न्यायपुरुष थे।

नेताई : देखिये साहब, हम लोगों के पास इतना फजूल का वक्त नहीं है। कुल पाँच दिन रह गये हैं चुनाव के—हमें बहुत काम करने हैं।

हाकिम : आप लोग जा सकते हैं।

नेताई : पर मामला तो हमारा है।

हाकिम : आपका नहीं, रामगुलाम का है।

चीलरसिंह : रामगुलाम के पास अपने हक को साबित करने के लिए कोई प्रमाण नहीं है।

हाकिम : गवाह तो हैं।

नेताई : देखिये हाकिम साहब, इलेक्शन-दौरे पर मन्त्रीजी आ रहे हैं—हमारे पास इतना वक्त नहीं है।

हाकिम : आप इलेक्शन का दबाव मेरे ऊपर डालना चाहते हैं ? इलेक्शन अलग है। चकबन्दी उससे अलग है।

नेताई : आप समझते नहीं। इलेक्शन का असर हर चीज पर है। हर चीज का असर इलेक्शन पर है।

हाकिम : मुझे मेरा काम करने दीजिये।

नेताई : हमें भी अपना काम करने दीजिये।

हाकिम : मैं सरकारी मुलाजिम हूँ।

नेताई : सरकार हम बनाते हैं।

हाकिम : नहीं, सरकार ये बनाते हैं—जिन्हें सरकार कोई फायदा नहीं पहुँचा पाती। बीच ही में तुम लोग सब डकार जाते हो।

नेताई : आपको हमारी ताकत का पता नहीं।

चीलरसिंह : बहुत देखे हैं, ऐसे हाकिम-अफसर।

हाकिम : चपरासी !

चपरासी : जी साहब !

हाकिम : यह लो चिट्ठी। थाने जाओ। पुलिस-ताकत के साथ फ़ौरन आयें थानेदार साहब। जाओ।

शाहजी : अरे साहब, आप तो नाराज हो गये। मैं इनकी तरफ से क्षमा चाहता हूँ।

हाकिम : तुम इनकी तरफ से कमाई भी करते हो।

नेताई : सर, मेरे मुँह से निकल गया—इलेक्शन के काम से दिमाग घूम गया।

चीलरसिंह : सर, तीन रात से हम सो नहीं पाये हैं—एक-से-एक बड़े नेता इधर दौरा कर रहे हैं।

हाकिम : आप किस पार्टी के लिए काम कर रहे हैं ? आप किस दल के हैं ?

चीलरसिंह : हम निर्दलीय हैं, सर ! आपसे क्या परदा, जिधर हवा देखते हैं उधर...ही ही ही !

हाकिम : तभी आप लोग केवल पुलिस की ताकत से डरते हैं।

चीलरसिंह : फिलहाल !

हाकिम : क्यों, रामगुलाम ?

रामगुलाम : हाँ साहब, आजादी तो इन्हीं लोगों की है।

हाकिम : याद रखिये—यह आजादी आप ही लोगों को पागल बना देगी। आजादी दो तरह की नहीं होती—एक तुम्हारी दूसरी रामगुलाम की, यह नहीं है आजादी। यह भय है—ताकत का भय। एक नहीं, जब सब एक-दूसरे से निर्भय होंगे, तब आयेगी नहीं, होगी आजादी। वहाँ होगा स्वराज्य। हम पर दूसरे का राज नहीं—यह तो आजादी है—अपने पर अपना राज्य, स्वराज्य...सब अपने अधीन, स्वाधीन।

नेताई : बकवास !

चीलरसिंह : उसके लिए जन-जागरण चाहिए।

सरजू : जैसे आप लोग जगे हैं वैसे ?

नेताई : हाँ, क्यों नहीं ?

सरजू : आप लोगों की तरह अगर सब जग जायेंगे—अभी तो गाँव में तीन पार्टियाँ हैं, तब कम-से-कम बहत्तर पार्टियाँ बनेंगी। आप कुल छः ही आदमी हैं।

रमई : फिर तो हर गाँव में पुलिस-थाना खुले, जभी काम चले। यही समझते हो कि आप लोग जगे हुए हैं ?

नेताई : जरूर !

सरजू : घोर अन्धकार की निद्रा में सोये हुए हो। जगी हैं केवल तुम्हारी इच्छाएँ, भय, क्रोध, अहंकार—और इसी पर सारी भ्रष्ट राजनीति खड़ी है। ताकि कहीं असली राजनीति न शुरू हो—तभी सबकी आजादी अलग-अलग है—क्योंकि सबकी इच्छाएँ, भय, क्रोध, अहंकार अलग-अलग हैं।

शाहजी : यह तो ऐसे बकते हैं, साहब, एक विनती करूँ ? हमारे मन्त्रीजी अच्छा नहीं बोल पाते—आप चुनाव-भाषण दीजिये—आपको मोटी रकम मिलेगी, वह मेरी जिम्मेदारी है। अरे, आप हँस रहे

हैं। क्या रखा है इस नौकरी में—गाँव में धूल फाँक रहे हैं बेमतलब।

नेताई : ठीक बात है, सर।

शाहजी : सरकार, जरा इधर आ जाइये। एक बहुत जरूरी बात है। आप तो ऊँचे विचारों के हैं।

(दोनों अलग जाकर)

यह योजना हमने बतायी थी मन्त्रीजी से कि चकबन्दी के समय इलेक्शन हो। इलेक्शन फंड में रुपयों की कमी नहीं रहेगी। चकबन्दी के दबाव में सौ फीसदी वोट भी मिलेंगे। आम-के-आम गुठली के दाम।

हाकिम : तो मैं क्या करूँ ?

शाहजी : आप ही के ऊपर तो सारा दारमदार है। आप अपनी मेहनत माँगेंगे तो ये सूद पर मुझसे रुपये कर्ज लेंगे। कर्जदार होंगे तो इन पर हमारा दबाव होगा। जिसका दबाव उसी का चुनाव, आप तो इतने समझदार हैं—थोड़ा कहना बहुत समझना।

हाकिम : तो यह विष इतने नीचे तक फैल चुका है। सुनो, सरजू, रमई, रामगुलाम, इसने जो अभी मुझसे कहा है—वह भयंकर है। पर मेरे लिए घी-शक्कर है।

नेताई : सावधान !

शाहजी : साहब, मेरी गरदन पर छुरी मत चलाइये। मैं बेकसूर हूँ—लाचार हूँ। मुझसे भूल हो गयी।

नेताई : इस शत्रु से बात क्यों की ?

सरजू : तुम लोग खुद हो अपने शत्रु। जो विष तुम लोगों में लगा है, वह इस माटी में न लग जाये, यही प्रार्थना है ग्राम-देवता से। जाओ, मेरे खिलाफ जो इच्छा हो करो। मैं गाँव-गाँव की धूल अपने माथे पर लेकर इन सबसे कहूँगा—यह नहीं है आजादी। जागो, जानकी इस भूमि से पैदा हो चुकी है। उठाओ शिव-धनुष, राम, बेधो इस अंधकार को। जागो, ग्राम-देवता ! जागो !!

हाकिम : चुप रहो। जागो-जागो। खुद जगे हो ? जब से आजादी मिली, कितना माल बटोरा ? कितनी ताकत हासिल की ? कुछ नहीं न, तभी इतनी ऊँची-ऊँची बातें कर रहे हो।

सरजू : तुम भी इन्हीं के आदमी निकले।

हाकिम : हम तो सरकारी आदमी हैं।

सरजू : हमारा कौन है ?

हाकिम : आँख खोलकर देखते क्यों नहीं, निर्बल का कोई नहीं होता। भजन गाते रहो—निर्बल के बल राम। चलो भाई, लंच का वक्त हो गया। अँगरेज चले गये, लंच और डिनर हमें दे गये।

(यात्रा चलती है। यात्रा-गान)

बम भोले शिव की बरात।
बम भोले शिव की बरात॥
कोई अंजर कोई पंजर
ऐसी अँधियारी रात।
बम भोले शिव की बरात॥
हिनहिनावैं गनगनावैं
भूत प्रेत पिसाच।
बम भोले शिव की बरात॥

छठा दृश्य

मसखरा : धनुषयज्ञ में, इस विघ्न के लिए हम क्षमा चाहते हैं। विघ्न आया है जाने के लिए। जब तक हमारे भीतर विघ्न-विदारक भगवान विराजमान हैं तब तक ये सारे विघ्न नाशवान हैं। बजाओ संगीत। गाओ प्रभु का गीत।

(संगीत-गायन उभरता है।)

आज दिवस लेऊँ बलिहारा
मेरे घर आया राम का प्यारा।
आँगन कानन भवन भयो पावन
हरिजन बैठे हरिजस गावन।
कथा कहे अरु अरथ विचारैं
आप तरे औरन को तारैं।

नेताई : बन्द करो यह पोपलीला। यहाँ न कोई रावण है, न राम है।

मसखरा : है, तभी तो कह रहे हो, नहीं है।

रमई : भाई, धीरज से काम लो। नेताईजी, आप राम का पार्ट करना चाहते थे। आइये, बनिये राम ! आइये ! लीला करने का मतलब ही यही है कि कोई भी राम बन सकता है। राम का अवतार त्रेता युग में हुआ था यह तो कथा है, पर सच्चाई यह है कि राम का अवतार आज भी होता है। जो चाहे वह राम हो सकता है।

नेताई : इसका मतलब क्या है ?

हीरा   तुम्हारी राजनीति का मतलब क्या है ?

गपोले : हे लक्ष्मण, चुप रहो, तुमसे मैं निपटूँगा ।

सरजू : देखो नेताईजी, पहले यहाँ कितने धूमधाम से रामलीला होती थी । सारा गाँव-जवार इससे मिलकर एक हो जाता था । पर उन्नीस सौ बासठ में ग्राम-पंचायत के चुनाव के नाम पर ऊपर से जो भ्रष्ट राजनीति यहाँ आयी, उस दिन से रामलीला बन्द, कथा-भागवत, गाना-बजाना, अखाड़ा-कबड्डी—सब खतम । सबका एक साथ बैठना-बोलना बन्द । तब से जो-जो इस गाँव-जवार में हुआ, उसे याद करने से क्या फायदा, हमने यही पाया कि कुछ ऐसा करें कि उस बहाने हम एक साथ बैठें, बोलें । ऐसा हो कुछ कि जिसमें सबकी साझेदारी हो ।

नेताई : ये मेरे दुश्मन हैं ।

सरजू : पर तुम्हारे ही तो हैं ।

मसखरा : ये बातें यहाँ कहने की नहीं हैं । रामलीला में देरी हो रही है ।

सरजू : पिछले इकतीस सालों से ये बातें कहने-सुनने का समय और स्थान कहाँ मिला ? सब अपने-अपने घरों में घुस गये ।

गपोले : भाई, लेक्चर बन्द करो । देरी हो रही है ।

नेताई : तेरी क्या राय है ?

गपोले : वाह-वाह ! आज मुझसे राय माँग रहे हैं । ऐसा है नेताजी, आकर जरा जनता में बैठ जाओ और देखो मेरा पार्ट ।

गड़बड़सिंह : पता चला जायेगा कि नेता के बारे में जनता क्या सोचती है ।

नेताई : हुश ! जनता कायर है ।

मसखरा : तभी तो नेता महाकायर है । सबूत चाहिए ?

नेताई : क्या कहा ?

मसखरा : मैंने कुछ नहीं कहा । उन्होंने कहा । उन्होंने...नहीं नहीं, उन्होंने ।

नेताई : सबूत मैं क्या दूँ, अवसर स्वयं ही दे देगा । कुछ ही क्षणों में यह धनुष उठेगा । पुराना धनुष है, इसे तोड़ना क्या बात है ? सैकड़ों जहाँ तोड़ डाले इसकी क्या औकात है ?

मसखरा : धन्य है, महाराज ! पार्ट अच्छा कर रहे हैं । जमे रहिये । अरे ! आप लोग जा रहे हैं ।

(रावण और बाणासुर जाते हैं ।)

चलो भाई, संकट टला, संगीत मारो ।

(संगीत ।)

जथा सुअंजन अंजि दृग, साधन सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखहिं सैलवान, भूतल भूमि विधान ।।

मसखरा : सावधान, अब आते हैं कश्मीर के राजा ।

(कश्मीर के राजा धनुष उठाने में असफल होते हैं ।)

क० राजा : इस धनुष में क्या रखा है ? नहीं उठाता इसे ।

मसखरा : क्या ?

क० राजा : नहीं उठाता, मेरी मरजी ।

मसखरा : कई बार उछली लोमड़ी, पर जब अंगूर हाथ न आये, तब बोली मुँह बनाकर—खट्टे हैं, अंगूर कौन खाये !

जनक : हाय, इस धनुष को अब कोई नहीं उठायेगा, हाय यह दुख और दारिद्रय सहा नहीं जाता । क्या ऐसा कोई पुरुष नहीं ?

अब जनि कोउ भाखे मखमानी
वीर विहीन मही मैं जानी ।
तजहुँ आस निज-निज गृह जाहू
लिखा न विधि वैदेहि विवाहू ।

लक्ष्मण :
सुनहु भानुकुल पंकज भानू
कहो सुभाउ न कछु अभिमानू ।
जो तुम्हार अनुशासन पाऊँ,
कंदुक सो ब्रह्माण्ड उठाऊँ ।
तोरो छत्रक दंड जिमि तब प्रताप बल नाथ ।
जो न करूँ प्रभु-पद-सपथ, कर न धरूँ धनु हाथ ।।

जनक : जवानों में इतनी ताकत है अभी, क्या इसे मैं मान लूं ? जो कहते हैं कर सकेंगे भी, क्या इसे सच मान लूं ?

लक्ष्मण : जनक, देख लें कि अभी वीरता है जवान में ।
दम ही क्या है उस पुरानी कमान में ।
क्षण-भर में यह धनुष भू पर होगा कि आसमान में ।
चुटकियों में उठा लूं और तोड़ूं आनबान में ।

गपोले : (सहसा) वाह बेटा लक्ष्मण चन्द ।
अभी करता हूँ तेरी बोलती बन्द ।

मसखरा : यह क्या असभ्यता है—जब देखो तब बीच में टपक पड़ते हो ।

गपोले : क्या कहा, असभ्यता ? नेताजी, जरा बताइये तो सही, क्या मतलब होता है असभ्यता का, फिर मैं बताऊँ ।

नेताई : असभ्यता—अ माने आ, और सभ्यता माने सभ्यता—मतलब

सभ्यता आ। यह सरासर गाली है। नहीं, नहीं, थोड़ा विचार करना होगा।

(यात्रा और गान)

बम भोले शिव की बरात।
बम भोले शिव की बरात॥

सातवाँ दृश्य

(मन्त्रीजी और लोग।)

नेताई : अरे मन्त्रीजी आये हैं, कुछ बैठने को लाओगे या टुकुर-टुकुर मुँह देखोगे ?

शाहजी : महाराजजी, आप मेरे दरवाजे पर बैठें, वहाँ सारा प्रबन्ध है।

हीरा : मन्त्रीजी जनता के हैं। जनता में आये हैं। बैठिये, श्रीमानजी।

(लखपतिया की पीठ पर बैठना।)

नेताई : हाँ, बोलो, किसे क्या शिकायत है ? किसे किस चीज की जरूरत है ?

सरजू : जिनके ले आने से आप यहाँ आये हैं उनके सामने कुछ कहने की किसी को कोई हिम्मत नहीं है।

मन्त्री : वाह-वाह, कितनी अच्छी भाषा है। अनुप्रास की कितनी सुन्दर छटा है—'कुछ कहने की किसी को कोई' ! वाह-वाह !

नेताई : कहने की हिम्मत नहीं है तो लिखकर दे दो।

मन्त्री : हाँ, सुन्दर सुझाव है।

नेताई : हाँ, हाँ, सुन्दर सुझाव है।

शाहजी : कहो तो हम लोग हट जायें।

गपोले : या गाँव छोड़कर चले जायें।

मन्त्री : कितने उच्च विचार हैं !

शाहजी : देखिये, आप लोग थोड़ा धीरे बोलिये, मन्त्रीजी बहुत कोमल स्वभाव के हैं। इन्हें सात बार दिल के दौरे पड़ चुके हैं। दिल

माने 'हार्ट' ।

रमई : सबसे गम्भीर दुख है रामगुलाम का । सबसे अधिक अन्याय इस पर हुआ है । और यही चुप है ।

मन्त्री : अरे, आज़ाद देश के नागरिक हो । अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है ।

रामगुलाम : क्या कहा साहेब, कुछ समझ में नहीं आया ।

मन्त्री : ओह भाषा क्लिष्ट हो गयी—अरे, अन्याय के खिलाफ बोलो, बोलो-बोलो । आवाज़ बुलन्द करो । अब भी मेरी भाषा क्लिष्ट है ?

(रामगुलाम चुप है ।)

यह क्या कहना चाहता है ? ओह, बहुत कम बोलता है ।

सरजू : गाँव में सबसे सीधा, चरित्रवान पर सबसे ज्यादा अन्याय का शिकार यही है । चोरी करावें ये, माल बेचें ये, और जेल काटे रामगुलाम ।

मन्त्री : तो रामगुलाम राजनीति में क्यों नहीं आता ? जेल और राजनीति का गहरा सम्बन्ध है ।

सरजू : हुज़ूर, क्या कहा ?

मन्त्री : आप लोग ज़रा उधर हट जाइये । मैं इन लोगों से कुछ जरूरी बात...।

(नेताई, शाहजी, गपोले एक ओर हट जाते हैं ।)

बात यह है कि किसी और को अब अपना आदमी बनाना चाहता हूँ । रामगुलाम कैसा आदमी है ? इसकी जाति ?

सरजू : पिछड़ी हुई ।

मन्त्री : इसकी ताक़त ?

सरजू : सच्चाई, सच्चरित्रता, आत्मविश्वास...।

मन्त्री : बेकार वक़्त बरबाद मत करो । इसके साथ इस जवार के कितने गुंडे, डाकू बदमाश, पैसे वाले, और क़ातिल हैं ?

सरजू : कोई नहीं, कोई नहीं ।

मन्त्री : फिर बेकार, बेमतलब है रामगुलाम । मुझे इस क्षेत्र से एक ऐसे नवयुवक की ज़रूरत है, बल्कि बड़ी बेसब्री से तलाश है जिसके पास ताक़त हो—लोगों को डराने वाली, खरीदने वाली ताक़त । मैं उसे एम० एल० ए० बनाऊँगा, अपना आदमी ।

लखपतिया : (उछल पड़ता है) मैं हूँ, सर ! आप मेरे ऊपर हाथ रख देंगे तो मेरी ताकत का अन्त नहीं रहेगा । मैं आपकी तन-मन-धन से सेवा करूँगा । जो आप इशारा कर देंगे, वही होगा ।

मन्त्री : शाबाश !

लखपतिया : मैं एक-एक को दिखा दूंगा अपनी ताकत। नेताई का कतल, शाहजी को जेल, गपोले को भीख मँगा दूंगा। यहाँ से दिल्ली तक डंका न बजा दूं तो मेरा नाम लखपतिया नहीं। सर, मैं हाई स्कूल में सात बार फेल। चाकू, छुरा, पिस्तौल, कट्टा चलाने में होशियार, बम बनाने में इक्सपर्ट। हड़ताल, घेराव, मारपीट, चोरी-चंडाली में इधर कोई मेरा सानी नहीं। बस, एक बार आपसे टिकट मिल जाये।

मन्त्री : नहीं-नहीं, मुझे ऐसा आदमी नहीं चाहिए।

लखपतिया : क्या ?

मन्त्री : मुझे ऐसा चाहिए जो यहाँ से प्रदेश की राजधानी तक ही सीमित रहे। तुम तो दिल्ली तक डंका बजाने वाले हो। ऐसा नहीं चाहिए मुझे।

लखपतिया : सर, ऐसी कौन-सी कमी है मुझमें ?

मन्त्री : तुम ज़रूरत से ज़्यादा आत्मसम्मानहीन आदमी हो—यह खतरनाक है मेरे लिए। चालीस वर्षों से यही मेरा जीवन रहा है। अब आप लोग इधर आ सकते हैं। हाँ, तो इस गाँव-जवार का असली मामला क्या है ? मेर पास वक़्त नहीं है। कहो, बेखटक कहो।

कालू : आइये सर, आरामकुर्सी पर। मुझे टिकट दीजिये, फिर देखिये कमाल। टेढ़ी टोपी लाल रूमाल।

मन्त्री : मिलते-जुलते रहना, देखूंगा।

कालू : तो बैठिये।

(कालू की पीठ पर बैठकर)

मन्त्री : भाई, कोई बिमला नाम की लड़की है।

सरजू : यह है विमला। रामगुलाम ने इसे अपने जीवन में शरण दिया—यही उसका अपराध हो गया।

रामगुलाम : नहीं, विमला ने मुझे अपने जीवन में शरण दिया।

मन्त्री : विचार उत्तम हैं।

सरजू : कहीं कुछ भी इनकी मरजी के खिलाफ होता है, ये उसे नष्ट करने की कोशिश करते हैं।

मन्त्री : भाई, इस कुर्सी में खटमल बहुत हैं। दूसरी लाओ।

गड़बड़सिंह : कुर्सी को झाड़े देते हैं, साहेब। (झाड़ता है) खटमल झड़ गये। बैठिये, श्रीमानजी।

मन्त्री : (बैठते हुए) यह बहुत पिछड़ा हुआ इलाक़ा है।

नेताई : कोई डेवलेपमेंट ग्रांट हो जाये, सर।

मन्त्री : बढ़िया स्कीम बनाकर दो, फ़र्स्ट क्लास।

शाहजी : इलाइची लीजिये, सर। (खाते हैं।) पान-सिगरेट कुछ भी नहीं हाँ, सादा जीवन उच्च विचार। महान आत्मा। जी, सर।

मन्त्री : हाँ, तो क्या कह रहे थे आप ? ज़रा नोट करते चलना जी। बड़ी उमस है।

(चीलरसिंह और नेउर धोती से हवा करते हैं।)

सरजू : थाना-ओ-इजलास से मिलकर अब ये लोग भयंकर केस चलाने की स्कीम बना रहे हैं विमला और रामगुलाम पर।

मन्त्री : यह विमलादेवी कौन हैं ? बार-बार यह नाम सुन रहा हूँ।

विमला : मैं हूँ विमला। रामगुलाम को साथ लिये हुए एक बार आपके बँगले पर मिली थी। इस गाँव-जवार की पूरी बात मैंने बतायी थी। हमने आपको एक आवेदन-पत्र भी दिया था।

मन्त्री : आवेदन-पत्र अँग्रेजी में था या हिन्दी में ?

रामगुलाम : हिन्दी में।

मन्त्री : (उठते हुए) फिर बताइये, मेरी क्या है ग़लती ? आवेदन-पत्र जब हिन्दी में हो तो मैं क्या कर सकता हूँ ? मेरी लाचारी आप लोग नहीं जानते। आखिर कोई तौर-तरीक़ा होता है। पूछता हूँ—उस आवेदन-पत्र पर तुम्हारे एम० एल० ए०, एम० पी० के दस्तखत थे ? बोलो, जवाब दो।

विमला : (रामगुलाम को झकझोरती हुई) बोलो, बोलते क्यों नहीं ? बोलो। बोलते क्यों नहीं ? जवाब दो।

(रो पड़ती है।)

रामगुलाम : रो नहीं, जिसे यहाँ न्याय नहीं मिला, उसे स्वर्ग में न्याय मिलेगा—यह सोचते-सोचते अब यहाँ पहुँच चुका हूँ—वह स्वर्ग इन्हीं का झूठ है। मैं इनसे क्या बोलूँ ? इन्हें क्या जवाब दूँ ? जवाब तो इन्हें देना था। उल्टे मुझसे जवाबदेही ! भगवान ने किसी को पीठ पीछे आँख नहीं दी। सब-कुछ सामने दिख रहा है। मैं मुड़-मुड़कर इन्हीं तीस-पैंतीस वर्षों को ही देखता रहा। तभी हमारी यह दशा हुई। इस गाँव-जवार का सत्यानाश हुआ। एक-एक कर सबके धनुष हाथ से छूटते चले गये। यह सम्पूर्ण धनुष टुकड़े-टुकड़े हो गया। कोई उसे उठाकर यह कहने वाला नहीं था, यह सुन्दर विराट धनुष हमारे पुरखों की कठिन तपस्या और त्याग से बना

है—इसे बाँटने, तोड़ने, अपवित्र करने का किसी को कोई अधिकार नहीं। एक ने कहा तो उसे सबके सामने गोली मार दी। उसके मुँह से निकला—हे राम ! दूसरे ने कहा तो उस यात्री को गला घोंटकर मार दिया—जिसके मुँह से निकला—यह मेरा नहीं, सबका है, इसलिए सम्पूर्ण राष्ट्र का है। कुछ नहीं होते तीस-पैंतीस, पचास-सौ वर्ष—इस भारत माँ के लिए। वह फिर हमें शंकर-पिनाक देगी।

सरजू : वह पिनाक ही तो टूटा हुआ है जातियों में, वर्गों-सम्प्रदायों में। तरह-तरह से तोड़ा है, ताकि इसे कोई उठा न सके इनके खिलाफ।

मन्त्री : भाई, ऐसी बात क्यों करते हो ? मेरा तो दिल धड़कने लगा। मुझे अस्पताल ले चलो फ़ौरन-फ़ौरन !

(लोग उन्हें कंधे पर उठाकर ले जाते हैं।)

रामगुलाम : धर्म अतीत में नहीं, केवल वर्तमान में है। यह शिव-धनुप हमारा वर्तमान है। अगर हमने इसे अनुभव नहीं किया तो हम अधर्म जीवन का बोझ ढोते हैं।

सरजू : फेंक दो अपने भूत को। मृत सत्ता को जब तक अपने सीने से चिपकाये रखोगे, सत्य नहीं पाओगे।

बिमला : क्या है सत्य ?

सरजू : जो तुम्हारा है।

बिमला : क्या ?

सरजू : तुम्हारा जीवन।

बिमला : भय, क्रोध, हिंसा, नफरत, दुख, निराशा...।

सरजू : यही...यही सत्य है। इन सब चीजों को समझना ही सत्य है। इनके प्रति किसका कैसा आचरण है, यही है जीवन-सत्य...शंकर-धनुष।

बिमला : हे राम !

सरजू : राम कोई दूसरा नहीं है। तुम हो राम, तुम हो। राम मृत सत्ता नहीं है जिसका सिर्फ नाम लिया जाये। राम जीवित सत्ता है। जितना जिया जाये उतना ही है जीवित। निर्बल का बल राम नहीं है। वह है ही नहीं तभी तो निर्बल हैं। अभाव को राम नहीं पूरा कर सकता। अभाव है तभी तो राजनीति भ्रष्ट है। अभाव है तभी तो इतनी दीनता है। राजनीति दीनता और अभाव से नहीं पैदा होगी। वह पैदा होगी एक-एक के आत्मबल से। एक-एक मिलकर

जितने जुड़ेंगे—उतनी गुना शक्ति बढ़ेगी। जितनी शक्ति बढ़ेगी, पीढ़ियों से चले आ रहे पाखंड और झूठ से यह समाज मुक्त होगा।

(यात्रा और यात्रा-गान)

जननी विनु राम अव ना अवध में रहिवै
राम विना मोरी सूनी अयोध्या
लछिमन बिन ठकुरायी
सीता बिना मोरी सूनी महलिया
के अब दियना जलायी
जननी बिनु राम अब ना अवध में रहिवै ॥

. . . .

आठवाँ दृश्य

(संगीत उभरता है। गायक गाते हैं।)

देबि तजिअ संसय अस जानी,
भंजब धनुष राम सुनु रानी ।।
सखि वचन सुनि भै परतीती,
मिटा विषाद बढ़ी अति प्रीती ।।
तब रामहिं विलोकि बैदेही,
सभय हृदय विनवति जेहि तेही ।।

मसखरा : हाँ तो, कोई है माई का लाल, धनुष उठाने वाला ? हो तो आ जाये—नहीं तो कहते फिरोगे—धनुषयज्ञ नहीं, नाटक है।

विश्वामित्र : उठहु राम भंजहु भव चापा। मेटहु तात जनक परितापा ।।

गपोले : रमई काका का परितापा।

मसखरा : फिर तुम बोले।

गपोले : भाई, मुँह से निकल गया।

रमई : यह तुम्हारी आदत हो गयी है—जबान पर कोई लगाम नहीं। अगर फिर बोले, तो यहाँ से बाहर निकाल दूँगा। तुम लोग अपने-आपको समझते क्या हो ?

नेताई : अपने-आपको क्या तानाशाह समझते हो कि दूसरे की जबान पर ताला लगा दो !

सरजू : आजादी, तानाशाही—ये तुम्हारे शब्द हैं, शब्द दो, अर्थ एक।

नेताई : तो उसे बोलने क्यों नहीं देते ?

सरजू : बोलने के लिए तुम्हारे पागलखाने काफी हैं। यहाँ रामलीला हो रही है। बार-बार तुम लोग विघ्न डालने की कोशिश करते हो। कभी मौन हो जाया करो, भाई ! बच्चे या पौधे का बढ़ना किसने सुना और देखा है ? सृजन-विकास मौन में है। शोर विनाश का लक्षण है। कुल्हाड़ी मारो, पेड़ में आवाज होगी, होती है न ? पर वृक्ष जब बढ़ता है, फूलता-फलता है तो आवाज नहीं करता, चिल्लाता नहीं कि देखो मैं बढ़ रहा हूँ। मौन होकर देखो...।

नेताई : हुअँ। बड़े बने हैं राम-लक्ष्मण ! बचपन में मेरे यहाँ भैंस-गोरु चराते थे।

सरजू : तुम्हारी आँखें तुम्हारी पीठ पर हैं।

नेताई : सब देख रहा हूँ।

सरजू : जिस दिन देखोगे, चुप हो जाओगे।

गपोले : आप बोल रहे हैं !

सरजू : एक धनुष से टूट-टूटकर सबको अलग-अलग आजादी—ऐसी आजादी पशु की आजादी है तभी हमें हाँकने वाला एक चरवाहा चाहिए। हर पाँचवें वर्ष हम वही चरवाहा चुनने को मजबूर होते हैं।

गड़बड़सिंह : हमें भेड़-बकरी किसने बनाया ?

सरजू : तुम वही हो, चाहे जिसने जैसे बनाया—इसे पहले स्वीकार करो, फिर करो अपनी आजादी नहीं, स्वतन्त्रता की बात। सोचते हो स्वतन्त्रता, स्वराज्य, पर चाहते हो स्वतन्त्रता और स्वराज्य तुम्हें कोई लाकर दे दे। कोई थाली में लाकर परोस दे और तुम मजे से खाओ। समझ लो, जनतन्त्र का फल उसी के लिए उतना है, जो जितना शक्तिशाली है। देखो, उस फल-लगे वृक्ष को, जो जितना अपने-आपसे बढ़कर, ऊँचे उछलकर ऊपर जायेगा, उतना ही फल पायेगा। इसमें उस फल-लगे वृक्ष का क्या दोष, इन लोगों के क्या दोष, जिन्हें हम लोग अपना शत्रु समझते हैं ? शत्रु हैं तुम्हारी निर्बलता, कायरता, अभाव जिसे हम अपनी आजादी मानते हैं। जीते हो दरिद्रता, करते हो अन्याय, बात करते हो आजादी की ! राम और कृष्ण ने युद्ध किये हैं, फिर पायी है स्वतन्त्रता। उठाओ यह धनुष, फल प्राप्त करो, राम। नष्ट हो सारी दरिद्रता।

विमला : यह धनुष टूटा है। अलग-अलग टुकड़ों में बँटा है।

हीरा : सब एक-दूसरे के शत्रु हैं।

रमई : सब दुखी हैं।

सरजू : क्योंकि सम्पूर्ण धनुष पर नहीं, सम्पूर्ण तो कभी देखा नहीं, धनुष के एक-एक टुकड़े पर सबकी नजर है। जो इसे समेटकर एक सम्पूर्ण धनुष के रूप में देखेगा, वही इसे उठायेगा। वही धनुष पर बाण रखकर बेधेगा इस गहरे अन्धकार को।

विश्वामित्र : उठहु राम भंजउ भव चापा। मेटहु तात जनक परितापा ॥

(संगीत बजने लगता है।)

दीनता से बड़ा और कोई पाप नहीं। अकर्मता से बड़ा और कोई अपराध नहीं। उठो राम, इस धनुष के ऊपर जितना कूड़ा-कचरा, युगों के मलबे का अम्बार लगा है, इसके भीतर हाथ डालकर उठाओ इस विराट पिनाक को, हम सब इसके सत्य और सौन्दर्य को देख सकें।

(राम बढ़कर धनुष उठाते हैं संगीत और गायन उठता है।)

भर भुवन कठोर रव,
रविवाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि,
अहि कौलकुलकलमले ॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें,
सकल विकल विचारहीं।

(दोनों सखियाँ गाती हुई जयमाला लिये जानकी को लेकर बढ़ती हैं।)

बड़े-बड़े नैना रामजी के, कजर भल सौहै हो।
रामा कौन तपस्या तुम कीन्हो
सीताजी धना पायो हो ॥
बाबा तो पूजिन महादेव मइया गौरा रानी हो।
हमरे रामजी का भाग सीताजी धना पायो हो ॥
ए हो सीता कौन तप कीन्ह रमैइया वर पायो हो।
जनम-जनम की तपस्या रमैइया वर पायो हो ॥

(जानकी जैसे ही राम के गले में जयमाला डालने लगती हैं, गपोले दौड़कर जानकी को रोकते हैं।)

गपोले : नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता। मेरे जीते जी यह नहीं हो सकता। यह अधर्म है। अत्याचार है।

गड़बड़सिंह : हट जाओ, असली परसुराम तैयार है।

गपोले : सज्जनो, भाइयो और बहनो, असली बात यह है कि रामगुलाम

और बिमला एक-दूसरे से शादी कर लेना चाहते थे, वैसे तो शादी करने की हिम्मत न थी, इसीलिए धनुषयज्ञ-लीला रची और इस बहाने शादी कर लेना चाहा। यह अधर्म है।

नेताई : ऐसा नहीं हो सकता।

शाहजी : हाँ।

विश्वामित्र : देखते क्या हो, राम ? युद्ध करो। लक्ष्मण, चलाओ धनुष। जहाँ ज्ञान-विज्ञान में, विश्वास-अन्धविश्वास में, गरीबों-अमीरों में, नीच-ऊँच में इतना अन्तर, इतनी दूरी है, वहाँ परिवर्तन युद्ध के बिना असम्भव है। युद्ध करो। शिव-धनुष पर चढ़ाओ बाण। रावण-वध करो, सीतापति राम। चलाओ शंकर-पिनाक—जानकी स्वतन्त्र हो ! जानकी सीता माँ।

(युद्ध-संगीत। राम-रावण-युद्ध। गायन)

दुसह दोष-दुख दलिन, करू देवि दाया।
छमुख हेरंब अंबासि जगदंबिके जै-जै भवानी,
चंड भुजदंड खंडिनि मुंड मद भगवानी।
संभु निसंभु क्रोध वारीधि अरिवृंद वोरे,
देहि माँ देवि विजय जेहि जाया,
दुसह दोष-दुख दलिन, करू देवि दाया।।

(राम द्वारा रावण और लक्ष्मण द्वारा वाणासुर की मृत्यु का अभिनय।)

विश्वामित्र : राम ! मृत रावण को उठाओ। लक्ष्मण, वाणासुर को गले से लगाओ। युद्ध, पर घृणा नहीं। विजय, पर अहंकार नहीं।

(राम-रावण, लक्ष्मण-वाणासुर गले मिलते हैं।)

जनक : बेटी, राम के गले में जयमाला डालो।

विश्वामित्र : देवि, जै हो।

(सीता राम के गले में जयमाला डालती है। लोग गले मिलते हैं।)

पहला परसुराम : अरे, यह धनुष तेरे हाथ में ! तेरी यह हिम्मत ? मेरे गुरु का अपमान !

दूसरा परसुराम : मूर्ख, पता है, यह शंकर-पिनाक है !

लक्ष्मण : इसमें असली परसुराम कौन है ?

गपोले : मैं।

गड़बड़सिंह : नहीं, मैं हूँ असली परसुराम।

मसखरा : कौन है असली परसुराम—युद्ध से इसका अभी फैसला हो जाये। मारो ! काटो !

(दोनों युद्ध करते हैं। मसखरा लड़ा रहा है।)

विश्वामित्र : टूटो नहीं। जुड़ो, लड़ो नहीं, देखो—देखो, तुम्हें कौन लड़ा रहा है ?

गपोले : ओ, यह बात है।

गड़बड़सिंह : आवो, हाथ मिलायें। देखो भाई, यहाँ से वहाँ तक एक पुल बनाना है। सब लोग अपने-अपने कामकाज में लगे हैं तो वह पुल कौन बनवाये ? इसके लिए हमें एक जिम्मेदार चरित्रवान आदमी चुनना होगा।

गपोले : यह चुन लिया हमने।

(नेताई को बीच में कर लिया है।)

गड़बड़सिंह : चूँकि हम सबने मिलकर इसे चुना, मतलब हम सबने अपनी-अपनी ताकत से थोड़ी-थोड़ी ताकत निकालकर इसे दे दी। फिर तो यह बहुत ताकतवर हो गया। यह पुल तभी बनवायेगा, जब हम इस पर अंकुश रखेंगे। नहीं तो बिना पीलवान के हाथी देखा है ?

मसखरा : भागो ! भागो ! ऐसा हाथी सब को रौंद डालेगा।

विश्वामित्र : राजनीति पुल बनाती है—जोड़ती है।

नेताई : भ्रष्ट राजनीति सिर्फ़ तोड़ती है।

विश्वामित्र : भ्रष्ट व्यक्ति है, समाज है तो राजनीति भ्रष्ट होगी। राजनीति को गाली मत दो, देखो इसे जोड़ो इसे अपने जन से, धरती से। भारतमाता की जै। सियावर रामचन्द्र की जै। मातु जानकी भारतमाता की जै।

(संगीत। यात्रा और गान)

रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर,
गावहिं सकल अवधवासी।
अति उदार अवतार मनुज वपु,
धरे ब्रह्म अज अविनासी॥

नौवाँ दृश्य

मसखरा : बस, भाई बस, अब आगे मुझसे नहीं चला जाता। लो, यह टोपी अपनी संभालो, मैं चला अपने घर।

सरजू : अरे, क्या करते हो ? लीला पूरी हो जाने दो।

मसखरा : राम ने धनुष उठा लिया। राम-जानकी का ब्याह हो गया। लीला खतम।

सरजू : यहीं से तो शुरू हुई।

मसखरा : तो सच-सच बात कह दूं ? चाहे किसी को बुरा लगे या भला ? राक्षस दैत्य हमारे देवता को पराजित कर चुका है। शंकर-धनुष उठाने से क्या होगा ? जब तक वह चलाया न जाये।

रामगुलाम : जब उठा है तो चलेगा।

मसखरा : चलेगा तो मैं चल रहा हूँ।

रामगुलाम : अरे-अरे, कहाँ चला ?

मसखरा : देखो भाई, जो बात बहुत जरूरी है उसे जरूर कहना होगा, चाहे कितनी कीमत पड़े। तो कह दूं ?

विमला : कह दो।

मसखरा : भ्रष्ट, पतित समाज पर, हमारी यह आज़ादी और प्रजातन्त्र ऐसा है जैसे मेरे सिर पर टोपी। टोपी लगा लो तो जोकर, टोपी उतार लो तो चोकर।

सरजू : जो ऐसी प्रजा को जन में बदल दे, वही है राम।

(गायन)

राम की लड़ाई आयी
हे भाई, हे भाई।
वोटों से आयी, नोटों से आयी।
गांधी से आयी, आँधी से आयी ।।
अफसर से आयी, नेता से आयी।
ऊपर से आयी, नीचे गिरायी ।।

विमला : लोहु से आयी, आसूँ से आयी ।।
शिवजी के धनुही से आयी ।।
(सबके हाथ में वही शंकर-धनुष)

सब : कैसी मजेदार बात
मिली हमें आजादी आधी रात।
(दूसरी ओर बिमला अपनी सखियों के साथ गाती है।)
तो क्या हुआ
बेला फूले आधी रात।
बेला फूले आधी रात
गजरा मैं के-के गले डालूँ ?
राम गले डालूँ, लखन गले डालूँ
बेला फूले आधी रात।

सब : कैसी मजेदार बात
आयी आज़ादी आधी रात।

सखियाँ : बेला फूले आधी रात ।।
(परदा)

• •

